ओ३म्

इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार,11 नवम्बर 2012

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 11 नवम्बर, 2012 से 17 नवम्बर, 2012

का. कृ. 12 – ● वि० सं०–2069 ● वर्ष 77, अंक 31, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 189 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,113 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित हुआ 'प्रेरणा पर्व'

श्री पूनम सूरी जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबंधकर्तृ समिति नई दिल्ली ने के अध्यक्ष पद संभालते ही यह संकल्प लिया कि वर्ष 2012–2013 में विभिन्न विचारणीय मुद्दों पर, हर महीने, क्रमवार देश के विभिन्न राज्यों में आर्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाए। इस श्रृंखला का प्रथम महासम्मेलन **'प्रेरणा पर्व'** के रूप में सोलन के ठोडो मैदान में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य था आओ संसार को सुखी बनायें।

सम्मेलन से तीन दिन पूर्व डी.ए.वी. स्कूलों के बच्चों और शिक्षकों ने प्रातः काल प्रभात फेरियां निकालीं। सम्मेलन स्थल पर बडी संख्या में आर्यजनों ने यज्ञ में आहुति दी। डॉ. कृष्णसिंह आर्य ने यज्ञ प्रक्रिया सम्पन्न करवाई। डी.ए.वी स्कूल लक्कड बाजार, न्यू शिमला तथा सोलन के 300 बच्चों के मंत्रगायन और मंत्रनाद ने अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रधान श्री पूनम सूरी ने दीप जलाकर सम्मेलन का शुभारंभ किया। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी सुमेधानन्द जी ने की। श्रीमति जे. काकडिया, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश ने अतिथियों का स्वागत किया। सम्मेलन में प्रधान श्री पूनम सूरी जी एवं स्वामी सुमेधानन्द जी के अलावा श्रीमति मणि सूरी, स्वामी चैतन्य मुनि, श्रीमति सत्यप्रिया, आचार्य देवव्रत, डा. सोबती, भूतपूर्व उप–कुलपति पंजाब विश्वविद्यालय श्री. एस.के शर्मा, श्री सतपाल आर्य, श्री एम.एल. सेखरी, श्री राजेन्द्र नाथ, श्री रविंदर कुमार, श्री विजय सब्बरवाल, श्री महेश चोपडा, श्री आर.के. सेठी, श्री एम.सी. शर्मा, श्री बालकृष्ण मित्तल के साथ–2 सोलन, राजगढ़, कुमारहट्टी के आर्यजनों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने हिस्सा लिया।

अपने वक्तवय में मुख्यातिथि श्री पूनम सूरी ने संध्या, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि डी.ए.वी की स्थापना को

126 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। सेवा भावना के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। –प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा कि आज शिक्षण संस्थाओं में युवाओं को विज्ञान, गणित और भाषा विषयों के साथ–2 जीवन मूल्यों के बारे में अवगत कराने की आवश्यकता है ताकि समाज में अच्छे वैज्ञानिक, अच्छे राजनेता, अच्छे नागरिक एवं अच्छे मनुष्य बन सकें, तभी पूरे विश्व का कल्याण होगा। साथ ही आज के सामाजिक मुद्दे कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, स्त्री शिक्षा, नशा, विशेषकर पर्यावरण सम्बन्धित विषय–पानी, ऊर्जा, सतत् विकास जैसे मुद्दों को प्रभावपूर्ण ढंग से सम्बोधित करना होगा तभी संसार को सुखी बनाया जा सकता है।

डा. कृष्णसिंह आर्य ने प्रेरणा पर्व की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से शिक्षा और प्रेरणा ले कर गुरु दक्षिणा के रुप में सामाजिक कुरीतियों एवं आडम्बरों और रुढ़ियों को दूर कर के एक नया समाज, एक नया इतिहास रचा था। आज भी उसी प्रेरणा, उत्साह और जज़्बे की आवश्यकता है। स्वामी सुमेधानन्द ने प्रधान श्री पूनम सूरी, उनके सहकर्मी और उपस्थित तमाम आर्यजनों को आशीर्वाद दिया और उन्हें आगे बढ़ कर इस दिशा में हार्दिक प्रयास करने का संकल्प लेने के लिए प्रोत्साहित किया। सम्मेलन के अंत में दयानन्द पब्लिक स्कूल, शिमला द्वारा नृत्यनाटिका आओ संसार को सुखी बनायें प्रस्तुत की गई। इस भावपूर्ण प्रस्तुति ने दर्शकों का मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर शिमला, कोटखाई, डगशई सोलन, बरमाना के बाल आश्रमों, वृद्व आश्रमों, स्लम ऐरिया, धर्मपुर के लेपरेसि सेन्टर, टी.बी. सेन्टोरियम, ढली शिमला और सुन्दरनगर के गूंगे, बहरे, विजुअली चैलेंजड बच्चों, घनाहट्टी, देवनगर, ठियोग, टूटू के गरीब रेखा से नीचे परिवारों के लिए कम्बल, शाल, स्वैटर, स्कूल बैग, एफ एम रेडियों, पैन ड्राइव, डीवीडी प्लेयर, ब्रेल बुक्स, चादरें, सिलाई मशीनें, व्हील चेयर आदि प्रदान किए गए।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 11 नवम्बर 2012 से 17 नवम्बर 2012

मनुष्य का कर्तव्य

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्याद्, ऋतस्य पथा नमसा विवासेत्।
उत स्वेन क्रतुना संवदेत, श्रेयांस दक्षं मनसा जगृभ्यात्।।

ऋग् १०.३१.२

ऋषिः **कवषः ऐलूषः**। देवता **विश्वेदेवाः**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**मर्तः**) मनुष्य, (**द्रविणं**) बल और धन को, (**चित्**) निश्चय ही, (**परिममन्यात्**) प्राप्त करना चाहे। [वह], (**ऋतस्य**) सत्य के, (**पथा**) मार्ग से, (**नमसा**) नमन के साथ, (**विवासेत्**) पूजा करे।, (**उत**) और, (**स्वेन क्रतुना**) अपने ही प्रज्ञान से–अपनी ही अन्तरात्मा से, (**संवदेत**) अनुकूलता स्थापित करे।, (**श्रेयांसं**) श्रेयस्कर, (**दक्षं**) सबल त्वरित निर्णय को, (**मनसा**) मन से, (**जगृभ्यात्**) ग्रहण करे।

● मनुष्य को चाहिए कि वह 'द्रविण' प्राप्त करे। 'द्रविण' बल का नाम है, क्योंकि बल के द्वारा ही हम किसी वस्तु को पाने के लिए और किसी शत्रु से आत्मरक्षा करने के लिए उसकी ओर दौड़ते हैं। 'द्रविण' धन का भी नाम है, क्योंकि धन के प्रति सब दौड़ लगाते हैं। बल से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों प्रकार का बल तथा धन से भौतिक एवं आध्यात्मिक उभयविध धन ग्राह्य है। अपने जीवन में इनका प्रत्येक मनुष्य संचय करे। मनुष्य का दूसरा कर्तव्य है कि वह परमात्मा की पूजा करे। संसार के सभी आस्तिक जन अपने मन में परमात्मा का कोई रूप कल्पित कर लेते हैं तथा उसकी पूजा का भी अपनी रुचि के अनुकूल कोई मार्ग चुन लेते हैं। परमात्मा के उन कल्पित रूपों तथा पूजा के उन मार्गों में से कौन–सा रूप और कौन–सा मार्ग सत्य है, इसके विवेक की आवश्यकता है। हमें देखना होगा कि ईश्वर–पूजा के नाम से हम कहीं किसी ऐसे मिथ्या आडम्बर में तो नहीं फँस गए हैं, जो ईश्वर से तो कोसों दूर है ही, समाज को भी पतन के गर्त में ले जानेवाला है? मनुष्य सत्य मार्ग का अवलम्बन कर नमन और नमस्कार के साथ सच्चिदानन्द–स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्ता परमेश्वर की पूजा करे।

मनुष्य का तीसरा कर्तव्य यह है कि वह अन्तरात्मा की वाणी को सुने। जीवन में अनेक ऐसे समय आते हैं जब मनुष्य संशयों से घिर जाता है तथा कर्तव्य–निश्चय नहीं कर पाता। साथी–संगियों के तथा जिन्हें वह अपना बड़ा और हितचिन्तक मानता है उनके परामर्श भी उसके सन्देहों को नहीं काट पाते। ऐसे समय मनुष्य अपने आन्तरिक प्रज्ञान की सहायता ले, अन्तरात्मा के साथ ऐक्य स्थापित करे। सच्चे अन्तःकरण से निकली आवाज़ उसका मार्गदर्शन करेगी। अन्तरात्मा की आवाज को सुनकर, किंकर्तव्यविमूढ़ अवस्था से पार होकर वह सबल त्वरित निर्णय पर पहुँचे तथा उसे क्रिया–रूप में परिणत करे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

उपनिषदों का संदेश

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में स्वामी जी कह रहे थे–सुनो! सुनो ऐ संसार के लोगो! ओ बारम्बार शिकायत करने वालो! तुम जो कहते हो न कि मन वश में नहीं आता तो इसे वश में लाने का उपाय सुनो! मन चञ्चल बहुत होता है, परन्तु वह बनता भोजन से। अपना भोजन शुद्ध कर लो, मन वश में हो जायेगा। देखो कि तुम बहुत अधिक लाल मिर्च तो नहीं खाते? बहुत अधिक उत्तेजक पदार्थ तो नहीं खाते? ऐसे करते हो तो छोड़ दो उसे। यह सबसे पहला साधन है–आहारशुद्धि।

अब आगे...........

प्रायः हम कहते हैं कि मन तो बन्दर की भाँति चंचल है, परन्तु बेचारे बन्दर की चंचलता इस मन के सामने क्या है? बन्दर जाता है वृक्ष पर, उसकी शाखाओं पर, मकान पर उसकी दीवारों और छतों पर, परन्तु यह मन–महाराज अभी यहाँ है, पलभर रंगून, चन्द्रलोक, सूर्यलोक, मंगल, बृहस्पति, शक्र, बुध – हे भगवान्! एक ही क्षण में कहाँ से कहाँ! कभी यह एवरेस्ट की चोटी पर है, दूसरे पल बंगाल की खाड़ी में। इसकी चंचलता का क्या साम्मुख्य? परन्तु अच्छा, मान लीजिये कि वह बन्दर की भाँति ही चंचल है। अब इस उछलते–कूदते बन्दर को आप शराब पिला दें, तो इसकी चंचलता बढ़ेगी या घटेगी? स्पष्ट है बढ़ेगी और इस शराबी बन्दर को बिच्छू काट ले, तब? किस प्रकार तड़पेगा वह? किस प्रकार बेचैन होगा? एक तो बन्दर, दूसरे शराब पी ली, तब काट लिया बिच्छू ने; उसकी चंचलता का पारावार कहाँ रहेगा? और यदि इस दशा में इस बन्दर के सिर पर कोई भूत सवार हा जाये तो फिर? – भगवान् ही बचाये!

यही अवस्था हम अपने मन की करते हैं। एक तो वह पहले ही बहुत चंचल है, बन्दर से बहुत अधिक चंचल। फिर हम उसे आशा और तृष्णा की शराब पिला देते हैं। यह मिल जाये, ऐसा हो जाये, वैसा हो जाये– ऐसा चाहने लगते है; इतनी यास जाग उठती है कि जिसका अन्त नहीं, सहस्त्र जन्म में भी अन्त नहीं–

मैं मुई न मन मुआ, मर–मर गये शरीर।
आशा तृष्णा न मिटे, कह गये दास कबीर।।

इस शराब को पीने के पश्चात् यह बन्दर चंचल न होगा तो और क्या होगा? और फिर इस शराबी बन्दर को काट लिया ईर्ष्या ओर द्वेष के विच्छू ने। किसी ने तीन–मंज़िला भवन बनवा लिया; जले ये जा रहे हैं। किसी को अच्छा पद मिल गया; घर में बैठ कर दाँत ये पीस रहे हैं। अपने चारों ओर अग्नि प्रज्वलित करके उसमें भुने जाते हैं।

एक सज्जन का बेटा जज या मन्त्री बन गया तो जलने वालों ने कहना आरम्भ कर दिया–'अजी, ये इसीलिए राज्य का पक्ष लेते हैं।' बेचारे बिना आग जलते रहते हैं। और तभी सिर पर सवार हो गया अहंकार का भूत।

मैं, मैं, मैं। मैं यह हूँ, मैं वह हूँ! मुझसे कोई ऐसी बात कहे तो मैं उसकी हड्डियाँ न पीस दूँगा! पीसते रहो भाई! दूसरे की हड्डियाँ पिसें या न, अपने आत्मा को तो तूने मन की चंचलता से पीस लिया है अवश्य। नहीं! मन को वश में करने की यह विधि नहीं। इसे वश में करना है तो पहले अपना आहार शुद्ध करो। आहार–शुद्धि पहला साधन है। जैसा आहार वैसा विचार। जैसा अन्न वैसा मन।

कुछ बेटियाँ कहेंगी कि यह अच्छा आनन्द स्वामी है, हमारी चटनी बन्द करना चाहता है। परन्तु नहीं बेटी, मैं तुम्हारी चटनी नहीं, मन की चंचलता बन्द करना चाहता हूँ जिसके कारण धन–सम्पत्ति और परिवार की विद्यमानता में भी तुम्हें शान्ति नहीं।

आहार शुद्ध हो तो बुद्धि शुद्ध होती है। बुद्धि शुद्ध हो तो स्मृति ठीक रहती है। स्मृति ठीक हो जाए तो हृदय की सब ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं। सब मैल दूर हो जाती है। वही मन वश में आने लगता है जिसे हम बन्दर की भाँति चञ्चल कहते हैं। मन के सन्देह दूर हो जाते हैं। ब्रह्मलोक

की प्राप्ति हो जाती है।

परन्तु आजकल आहार की जो दशा हो रही है, उसे देखकर तो कहना चाहिए कि इस आधारभूत बात का ही हमने सत्यानाश करके रख दिया है।

ऐतरेयोपनिषद् में एक कथा आती है कि भगवान् जब सारी सृष्टि बना चुके– पशु, पक्षी, मनुष्य वृक्ष, फूल, फल सब बन चुके तो मनुष्य और पशु सब इकट्ठे होकर भगवान् के पास पहुँचे। मनुष्य ने आगे बढ़कर कहा, ''महाराज! आपने बना तो दिया हमें, परन्तु अब हम खायें क्या? और कितनी बार खायें?''

ईश्वर ने कहा, ''तुम 24 घण्टे में , दिन और रात में दो बार खाओ।'' मनुष्य ने सुना, पीछे हट गया। पशुओं ने सुना तो वे घबराये। आगे बढ़कर बोले, ''महाराज! 24 घण्टे में केवल दो बार? हम तो भूखे मर जाएँगे?''भगवान् ने मुस्करा कर कहा, ''घबराओं नहीं। 24 घण्टे में दो बार खाने की बात तुम्हारे लिए नहीं, केवल मनुष्यों के लिए है। तुम तो पशु हो, चाहे जितनी बार खाओ। दिनभर खाओ। रात को भी खाओ। तुम्हारे लिए कोई नियम नहीं।''

यह थी भगवान् की आज्ञा। परन्तु आज का मानव! उसने जब देखा कि पशु हर समय खाते हैं तो उसने सोचा–यह पशु मुझसे छोटा और खाये अधिक, यह तो ठीक नहीं, मुझे भी अधिक खाना चाहिए और तब उसने अपना प्रोग्राम बनाया। अर्ली टी (Early Tea), बेड टी (Bed Tea) और फिर टी, फिर पी, और फिर पी, पी टी, पीटी, पी टी, सारा दिन यही होता रहता है।

ख़ुर्दन बराये ज़स्तीन व ज़िक्र करदन अस्त।
तो मोतक़द कि ज़ीस्तन अज़ बहरे
खुर्दन अस्त।।

अरे भाई! खाना इसलिए चाहिए कि जीवित रहो और भगवान् को याद करो, और आप आप समझ बैठे कि जीवन ही खाने के लिए है।

सुनो! जो अधिक खाता है वह जल्दी मर जाता है और इसका कारण बिल्कुल स्पष्ट है। प्रत्येक उत्पन्न होने वाले व्यक्ति को परमात्मा एक राशन–कार्ड देता है, आज्ञा देता है कि जीवन में तू इतना खायेगा इससे कम नहीं, अधिक भी नहीं। अब यह आपके अधिकार में है कि इस राशन को शीध्र समाप्त कर दीजिये अथवा देर से। जितनी देर राशन रहेगा, उतनी देर आप जियेंगे। मान लीजिये राशन में 5 सेर आटा आपको मिला। उसे आप पाँच दिन में भी समाप्त कर सकते हैं, पाँच सप्ताह में भी। जितनी देर वह है।, उतनी ही देरी है। वह समाप्त हो गया तो फिर समय से पूर्व दूसरा मिलेगा नहीं।

एक था दुर्गा मोटा। लाहौर में रहता था कितना मोटा था वह, यह न पूछिये। एक दिन वह 'मिलाप' के ऑफिस में आ गया। पूछा,''सुनाओ भाई दुर्गा! कुछ पानी–वानी पिओगे?'' उसने कहा, ''नहीं, पानी नहीं पीना।'' मैंने कहा, कोई सोडा पिलाएँ तुम्हें?'' वह बोला, ''न, सोडा नहीं पीता मैं।'' मैंने कहा, '' कोई लेमनेड?'' वह बोला, ''हाँ, लेमनेड पिला दो।'' मैंने चपरासी से कहा, '' इनके लिए लेमनेड की एक बोतल ले आओ।'' दुर्गा बोला, ''एक बोतल से क्या बनेगा?'' मैंने कहा, ''फिर कितनी बोतल पियेगा?'' उसने कहा, '' जितनी पिला दो, दस, बीस, तीस।'' मैं चकित हुआ, समझा कि विनोद कर रहा है। चपरासी से दो दर्जन लेमनेड ले आओ। बोतलें आईं तो मैंने कहा, ''एक–एक को खोलते जाओ, इन्हें पिलाते जाओ।'' दुर्गा बोला, '' न जी इस प्रकार नहीं। सारी बोतलें खोल दो ओर एक बाल्टी में डाल दो।'' मैंने चपरासी को ऐसा ही करने को कहा, और हे भगवान्! मेरे देखते–ही–देखते वह सारी बाल्टी पी गया। परन्तु सुनो, वह बेचारा दुर्गा अब जीवित नहीं है। छोटी ही आयु में मर गया। यह हैं बहुत खाने का परिणाम!

एक किंगकांग है। मैं था कश्मीर में। वह भी वहीं था। मैंने अपनी कथा में एक दिन कहा कि मनुष्य को थोड़ा गाड़ियों की टक्कर हो जाती है। घूस के कारण, स्वाद के कारण हम भी सब–कुछ खाये जाते हैं – मुरब्बे, अचार, चटनी, पापड़, भिण्डी, आलू, पराँठे, दाल, दही, खीर, सब कुछ। पता उस समय लगता है जब वे अन्दर जाकर लड़ने लगते हैं।

सभी लोग जानते हैं कि दही और खीर इकट्ठे नहीं खाने चाहिएँ। परन्तु आज एक भाई के घर में भोजन करने गया तो वहाँ दोनों वस्तुएँ विद्यमान थीं। मैंने कहा, ''दोनों तो मैं खा नहीं सकता।'' वे सज्जन बोले, ''पेट में दही का खाना अलग होता है, खीर का अलग।'' परन्तु सुनो। पेट में एक ही खाना है। वहाँ जाकर यह सब अगड़म–सगड़म एकत्रित हो जाता है। सबका सम्मेलन आरम्भ होता है। वहाँ – सब्जी सम्मेलन। तब आलू कहता है भिण्डी से, 'पहले तू पच जा।' भिण्डी कहती है, 'पहले तू, मैं तो पीछे आई थी। इस प्रकार सब लड़ते हैं, मेरा कार्य बिगड़ जाता है। ऐसा नहीं करना चाहिए। आहार को उचित मात्रा में खाना चाहिए।

एक बहुभोजी पण्डित जी प्रीतिभोज में गये। बहुत–से पेड़ वहाँ खा गये। घर में आये तो पेट में होने लगा दर्द। वैद्य आये। उन्होंने कहा, ''पण्डित जी, चूर्ण खा लो।'' पण्डित जी ने कहा, ''वैद्य जी चूर्ण खाने का स्थान होता तो एक पेड़ा और न खा लेता!'' नहीं, इस प्रकार न खाओ। भोजन करो अवश्य, परन्तु थोड़ा खाओ और शुद्ध खाओ। यदि आप बहुत अधिक लाल मिर्चें खाते हैं, बहुत चाय पीते हैं, सिगरेट पीते हैं और दूसरी उत्तेजक वस्तुएँ खाते हैं, तो स्मरण रखिये, आपका आसन कभी दृढ़ नहीं होगा। ध्यान में बैठेंगे तो बहुत देर बैठा नहीं जायेगा।

अब इस चाय को देखिये। 1906 में मैं प्रथम बार अपने ग्राम से लाहौर आया। 1907 में लाला लाजपतराय जी निर्वासित हुए। उस समय अनारकली बाज़ार के चौक में एक व्यक्ति अपने सामने एक मेज़ –स्टूल रखकर बैठा करता था। स्टूल पर ग्रामोफ़ोन होता था। उस पर एक रिकॉर्ड बजता रहता जो कहता रहता था–

पी लो शक्ति देने वाली है। मुफ़्त चाय
की प्याली है।।

और मेज़ पर रहता था एक स्टोव और बहुत –से प्याले। वह व्यक्ति लोगों को निःशुल्क चाय पिलाता था। इसके अतिरिक्त लाहौर में चाय की कोई दुकान नहीं थी। अब उस लाहौर में, या इस दिल्ली नगर में या किसी भी भारतीय नगर में चले जाओ, प्रत्येक दसवीं या बारहवीं दुकान चाय की मिलेगी। परन्तु यह चाय हमारे देश के लिए अच्छी तो है नहीं। यह उन देशों के लिए है जहाँ सर्दी अधिक होती है। कश्मीर में जाओ, शिमला या मसूरी में जाओं तो पी लो थोड़ी चाय, परन्तु यहाँ गर्म स्थानों में हर समय चाय? वस्तुतः यह हमारे देश के लिए अच्छी नहीं।

पहली वस्तु है आहार या भोजन! इस पर बहुत बल देता हूँ तो इसलिए कि मन को वश में करने के लिए यह आधारभूत बात है। परन्तु अब समय हो गया पूरा, इसलिए शेष कल। ओ३म तत् सत्

सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर श्री पूनम सूरी आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का सन्देश

आओ! सबसे पहले हम सब मिलकर उस पावन वेदमंत्र का जाप करें जो शायद स्वामी दयानन्द को सबसे प्यारा था –

'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव,
यद् भद्रं तन्नआसुव' यजुं 30.3

इस मंत्र में हमने मिलकर सवितादेव परमपिता परमात्मा से सब प्रकार के दुरित अर्थात् बुराइयों, विघ्न, बाधाओं, फूट, वैमनस्य को दूर करने एवं भद्रभ् अर्थात् सब अच्छाइयाँ मंगल देने की प्रार्थना की है।

आर्यो, आर्य सज्जनों मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि मुझे पूज्य स्वामी सुमेधानंद जी, स्वामी आर्यवेश जी एवं अन्य आयोजकों ने आपसे विचार–विनिमय करने का सुअवसर प्रदान किया है। इसके लिए मैं समस्त आयोजकों का तहेदिल से शुक्रिया करता हूँ।

(आर्यो, आर्य सज्जनों मेरा बहुत सौभाग्य है कि मुझे श्री राजसिंह आर्य जी, श्री विनय आर्य जी तथा श्री धर्मपाल जी एवं अन्य आयोजकों ने आपसे विचार–विनिमय करने का सुअवसर प्रदान किया है। इसके लिए मैं समस्त आयोजकों का तहेदिल से शुक्रिया करता हूं।

मैं आज आप सब के समक्ष स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं इस आयोजन में स्वयं एक सामान्य सदस्य, आर्य के रूप में उपस्थित होना चाहता था। मेरी अंतरात्मा की इच्छा थी कि मैं आपके साथ मिलकर वर्तमान समस्याओं को सुलझाने में साझीदार बनूँ।

परन्तु मैं अपनी अन्तर्व्यथा को इस संदेश के माध्यम से आप तक पहुँचाना चाहता हूँ कि मैं फूटग्रस्त आर्यसमाज के किसी भी घड़े के साथ हूँ नहीं। मैं किसी धड़े के सम्मेलन में आकर फूटपरस्ती को बढ़ावा देने के पाप का हिस्सेदार नहीं बनना चाहता। यह हमारी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग का सर्वसम्मत फैसला है।

मुझे प्रसन्नता होगी, जब आर्य समाज का नेतृत्व एक होकर मुझे आवाज़ देगा, मैं उसी वक्त नंगे पाँव, उसी हालत में आर्यों के चरणों में नमन करने अवश्य आऊँगा।

मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ आर्यो! एक जो जाओ!

शेष पृष्ठ 4 पर ☞

बापू का चरखा

● कृष्ण मोहन गोयल

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्लाह एक ही नाम, सबको सन्मति दे भगवान,

उपरोक्त पंक्तियां गाँधी जी का प्रमुख दैनिक भजन थीं। जिसे वे नित्य प्रति प्रातः काल प्रार्थना में सम्मिलित रुप से गाया करते थे। जिसका भाव है कि परमपिता परमेश्वर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वामी है। जिसके स्मरण मात्र से पतित से पतित व्यक्ति का हृदय भी शुद्ध हो जाता है। उसको चाहे अल्ला कह करके पुकारो, चाहे ईश्वर के नाम से नाम स्मरण करो, वह एक ही है। उस परमब्रह्म से निवेदन करते हुए कहा गया कि हे जगत पिता हम सबको तू सद्बुद्धि प्रदान कर, जिससे हम सदैव सत्पथ की ओर अग्रसर हों।

गाँधी जी नवजीवन तथा यंग इंडिया समाचार पत्रों में अपने पत्र प्रकाशित कराया करते थे। यह पत्र उनकी दैनिक दिनचर्या थे। इस श्रृंखला में 11.07.1926 का एक प्रशंसक के पत्र का प्रारूप प्रस्तुत हैं।

यह उस समय की बात है, जब हमारा देश परतन्त्रता से त्रस्त था। देश में विदेशी वस्त्र पहने जाते थे। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने के लिए देश में चरखे पर सूत कातने की योजना गांधी द्वारा प्रारंभ की गयी थी। उस समय बहुत कम लोग चरखे पर सूत कातने के विषय में जानते थे, पर सूत कातने की योजना बनायी गयी। सर्वप्रथम इसके लिए लकड़ी के चरखे बनाये गये, फिर उन पर सूत कातना, सखाने वाले बुलाये गये, जिन्होंने देशवासियों को चरखे पर सूत कातना सिखाया। इसके पश्चात् इस योजना में धीरे–धीरे स्त्रियां भी शामिल हो गयीं। उस समय सूत कातना बहुत कठिन कार्य था। एक बार की बात है कि किसी व्यक्ति ने गांधी जी को एक ऐसी चर्खे से कती हुई पूनी भेजी जो भद्दी, ढीली, खराब कती और बंधी हुई थी तथा उसके माप भी नहीं थी। उसने गांधी जी को एक पत्र लिखँ आप अपनी सू कातने वाली संस्था के बहुत से स्वयं सेवकों से सूत कती पूनियां मंगाते हो। मैं भी आपकी इस संस्था में सम्मिलित होना चाहता हूँ। कृपया मेरे द्वारा भेजे गये सूत की लम्बाई बताएं। यदि यह कम हो तो मैं आप को और भेज दूँगा। यहां पर पूनियां सरलता से नहीं मिल पाती हैं। क्या आप मुझे भिजवा सकते हैं?

इसके उत्तर में गाँधी जी ने कहा–कल्पना करो कि हमें अपने देश में चपातियां बनानी नहीं आती हैं तो हमें कब तक जापान देश से आयात करके उनकी बनायी हुई स्वादिष्ट, रंगीन सुन्दर आकृति की चपातियां खा सकते हैं और इस देश का क्या होगा जब हम चपातियां बनाना और पकाना भूल जायेंगे, इस की कल्पना करके थोड़ा दूरदृष्टि डालकर यज्ञ का सुझाव दिया और सभी से इस यज्ञ में सहयोग देने अपील की।

जिसके प्रत्युत्तर में किसी देशभक्त, जो बहुत ही उत्साहित था ने किसी व्यक्ति से आटे की कुछ लोईयां प्राप्त करके मुझे कुछ तिकोनी, अधपकी, अधजली, जो रास्ते में आते–आते कुछ मैली सी हो गयीं थीं यह लिखते हुए भेजी– 'आपकी चपाती यज्ञ योजना की अपील के सन्दर्भ में मैने भी यह विचार किया कि मैं भी इस यज्ञ में भाग लेकर सहयोग दूँ। मैं आज आपको कुछ रोटियां भेज रहा हूं। कृपया इनकी गिनती कर लीजिये और कृपया बताइये कि क्या ये पर्याप्त हैं? यदि नहीं, तो मैं और भेज दूंगा। वर्तमान में मेरे सामने एक कठिनता यह है कि यहां पर आटे की लोइयां पर्याप्त मात्रा में सरलता से उपलब्ध नहीं हैं। यदि आपके पास उपलब्ध हो जाती हों तो कृपया मुझे भेज दीजिए।

मेरी इस चपाती यज्ञ योजना में सम्मिलित व्यक्ति के पत्र को जिसने भी पढ़ा, वह हंसा और बोला कि निसंदेह यह व्यक्ति वास्तव में देश भक्त है, परन्तु यह नहीं जानता है कि वह अपने इस देश प्रेम को किस प्रकार क्रियान्वित करें? मेरा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि इस चपाती यज्ञ योजना से मेरा क्या तात्पर्य है? परन्तु हर कोई मेरे इस भाव को तुरंत नहीं समझ सकता है कि वह व्यक्ति जिसने सूत कताई यज्ञ में ठीक वेसे ही सहयोग दिया है, जिस प्रकार हमारे एक स्वयं सेवक ने चपाती यज्ञ में सहयोग दिया। यह सही है कि हम किसी भी कार्य को काफी लम्बे समय तक न करने के कारण उस कार्य को करना भूल जाते हैं और यही मानसिक भूल का प्रतीक हैं, ठीक इस प्रकार हम चरखा कातना भूल गये हैं। क्योंकि जब हम रोटी बनाना भूल गये तो हमें भूखा रहना पड़ा तो हम अभ्यास से तिरछी, कुछ जली, अधपकी, रोटी बनाने लगे। यह प्रक्रिया सूत कातने के साथ है।

सूत कातने की प्रक्रिया के लिए हमें अभ्यास चाहिए। इसके प्रारंभ में हमें अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। प्रारम्भ में उचित ढंग से मन लगाकर कुछ घंटों के लिए बैठना होगा। धीरे–धीरे हम अभ्यास से कुछ समय के पश्चात् उचित अभ्यास से साफ, सुन्दर, लम्बा सूत कातने में समर्थ हो जायेंगे। फिर हम इसे सुन्दरता से पैक करके, लेबिल लगाकर एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजने में समर्थ हो सकेंगे। जिससे भविष्य में विभिन्न प्रकार के बहुत सुन्दर–सुन्दर रंगीन वस्त्र बनाये जा सकेंगे और हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति विदेशी वस्त्रों को त्याग कर स्वदेशी वस्त्रों को पहन कर देश को अंग्रेजों की परतन्त्रता से मुक्त कराने में अपना सहयोग दे सकेगा। यही देश वासियों के लिए सूत यज्ञ की योजना है।

113–बाज़ार कोट
अमरोहा

☞ *पृष्ठ 3 का शेष*

सार्वदेशिक सभा द्वारा ....

हम कौन थे, क्या हो गए? और क्या होंगे अभी? आओ! विचारें बैठकर, ये समस्याएँ सभी। देश के कोने–कोने से पधारे श्रद्धालु, दयानन्द भक्त, आर्य प्रतिनिधियों का मैं समस्त डी.ए.वी. परिवार और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक स्वागत, अभिनंदन एवं वन्दन करता हूँ। आप साक्षात् आर्य समाज हो।

आपकी वेदनिष्ठा, चरित्र की बदौलत आज विश्वभर में आर्य समाज के सिद्धांतों और स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों का प्रचार–प्रसार हो रहा है। मैं आपकी श्रद्धा निष्ठा, समर्पण के आगे नतमस्तक हूँ।

आज मैं आपके साथ मिलकर उस दृश्य का स्मरण करना चाहता हूँ जब मात्र कोपीनधारी एक अकिंचन अखण्ड ब्रह्मचारी संन्यासी दयानन्द ने अपने गुरु, जगद्गुरू स्वामी विरजानन्द के समक्ष हाथ जोड़कर प्रतिज्ञा की थी।

''हे गुरुदेव! मैं अपने रक्त की अंतिम बूंद तक वेद, सत्य और धर्म का प्रचार–प्रसार करता रहूँगा।''

इतिहास साक्षी है कि स्वामी दयानन्द ने 18 घण्टे की अखण्ड समाधि के अलौकिक सुख को तिलांजलि देकर समाज में व्यप्त रूढ़िवाद, पाखण्ड, अंध विश्वास, अज्ञान, अविद्या, अन्याय व अभाव के नाश के लिए लड़ाई लड़ी। दुनिया का कोई स्वार्थ, प्रलोभन भय अथवा दुराग्रह उन्हें अपने पथ से विचलित न कर पाया।

आज से दस दिन बाद फिर वह दिन आएगा जब 129 वर्ष पूर्व 30 अक्टूबर को ऋष्ि दयानन्द ने सत्य की बलिवेदी पर अमर बलिदान दिया।

स्वामी दयाननद के सत्य प्रचार से विधर्मियों ने अपने धर्मग्रन्थों एवं घोषित मान्यताओं को तथाकथित आसमानी किताबों को बदल डाला। पाषाण की मूर्ति को भगवान मानने वाले हिन्दू भाई मूर्ति में सर्वव्यापक भगवान की सत्ता न मान उसे मात्र प्रतीक मानने लगे। स्त्री और शूद्र को वेदाधिकर देने को विवश हो गए ईसाई ओर मुसलमानों ने अपनी धर्म–पुस्तकों में बदलाव कर डाला।

ऋषि के बाद उनके भक्तों ने हज़ारों आर्य समाजों, डी.ए.वी. स्कूल, कॉलेज एवं गुरुकुलों के माध्यम से मैकाले की कूट शिक्षा–नीति का विरोध करके ईसाईयत की आंधी पर सफल रोग लगाई। महात्मा हंसराज के डी.ए.वी. संस्थान और स्वामी श्रद्धानन्द के गुरुकुल देशभक्ति के किले व छावनियाँ बन गए। इन संस्थाओं से प्रशिक्षित व संस्कृत सपूतों ने उस अंग्रेज को, जिसके राज्य में कभी सूर्य अस्त न होता था, अपना बोरिया बिस्तर बांधकर सात समुद्र पार वापिस भेज दिया।

दूर बैठा एक विद्वान दार्शनिक एण्ड्य जैक्सन लिख बैठा......

''मैं एक आग को देख रहाहूँ........ वह आग है आर्य समजा।''

कांग्रेस प्रधान सीताभिपट्टरमैया को स्वतंत्रता संग्राम में जेल में जाने वालों में 88% आर्य समाज मानने पड़े।

आर्य मित्रो! स्वामी दयानन्द से साक्षात् आर्य धर्म की दीक्षा लेने वाले मुंशी गणेशदास का प्रपौत्र होने का गौरव प्राप्त है जिन्हें स्वयं ऋषि दयानन्द जी ने आर्य धर्म में दीक्षित किया था। महात्मा आनन्द स्वामी की गोदी में मैंने मुस्कराते हुए वैदिक सिद्धांतों को पढ़ा।

मेरे ताया श्री रणवीर जी को फाँसी का हुक्म हुआ। श्री यश को अनेकों बार जेल जाना पड़ा, तथा पिता को स्वतंत्रता संग्रम में पुलिस द्वारा की गई पिटाई को भोगना पड़ा। परिवर ही ईशकृपा से आस्तिकता ओर बलिदान की परम्परा का पोषक रहा। मैं ऐसे परिवार की विरासत का उत्तराधिकारी हूँ क्योंकि ''वयं यतीमहे स्वराज्य'' का पहला पाठ पढ़ाने वाले स्वामी दयानन्द थे।

अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, वीर भगतसिंह, भाई परमानंद, भाई

शेष पृष्ठ 5 पर ☞

क्या ढहता पाकिस्तान अपने आतंकवादी व्रण को रिसते देने के लिए मजबूर है?

● हरिकृष्ण निगम

क्या पाकिस्तान जानबूझकर अपने देश में आतंकवादी घाव लगातार रिसने देता है? कुछ विशेषज्ञों द्वारा इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में दिया गया है, विशेषकर जब ओसामा विन–लादेन की मृत्यु की वर्ष गांठ मनाई जा रही थी। उदारवादी पश्चिमी विश्व जहाँ इस दुर्दान्त आतंकवादी के अन्त पर संतोष प्रकट कर रहा है, पाकिस्तान शायद दुनियां का अकेला देश हैं जहाँ उस दिन एकत्रित हो सैकड़ों प्रदर्शनकारी मृतक आतंकवादी की विचारधारा पर एकजुटता प्रदर्शित कर रहे थे।

इस प्रश्न को उठाने के स्थान पर कि बिन लादेन पाकिस्तान में वर्षों से, बिना किसी को पता लगे, किस प्रकार रह रहा था, पाकिस्तानी सर्वोच्च न्यायालय ने प्रधानमंत्री यूसुफ़ रज़ा गिलानी को आरोप लगाते हुए इस बात पर दण्डित किया कि उन्होंने न्यायालय की अवमानना की है। न्यायालय के इस अपमान का विषय सिर्फ यह था कि उन्होंने स्विट्ज़रलैण्ड की सरकार की दशक पुराने भ्रष्टाचार की जांच को, जो राष्ट्रपति आसिफ़ अली जरदारी के विरुद्ध थी, उसे फिर से शुरू करने के लिए दबाव डाला था। यह बात दूसरी है कि स्विस अधिकारियों ने कह दिया था कि भ्रष्टाचार के वे मुद्दे अब खोले नहीं जाएंगे।

इस प्रकरण पर निर्णय देते हुए सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश ने तो प्रसिद्ध लेबनानी कवि खलील जिब्रान को ही उद्धृत करते हुए कहा – *''उस राष्ट्र पर दया आती है। जो अपनी राष्ट्रीयता को धर्म के नाम पर अंगीकार करता है पर जो सत्य, सदाचरण और ज़िम्मेदारी पर कुछ भी ध्यान नहीं देता है। जो हर आस्था का निचोड़ है।''*

जब सर्वोच्च न्यायालय को अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कविता को उद्धृत करना पड़ा और दण्ड देते समय कानून को नहीं, तब समझ लेना चाहिए कि चुने गए नेता का संशयपूर्ण आचरण स्वयं पाकिस्तान जैसे राज्य को धार्मिक उन्माद व आतंकवाद की कितनी बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, स्पष्ट है।

बोस्टन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और पाकिस्तान के अमेरिका में 2008 से 2011 तक कार्यरत राजदूत हुसेन हक्कानी के मत में आज पाकिस्तान उन दो प्रकार की विचारधाराओं के ध्रुवीकरण से गुज़र रहा है जहां एक ओर आधुनिक बहुलतावादी और आतंकवाद विरोधी दृष्टि रखने वाले लोग हैं और दूसरी और आतंकवाद के समर्थक मध्ययुगीन धर्मान्ध लोग हैं जो यह सब इस्लाम के नाम पर करते हैं। अनेक लोग विचारों की इस दुनिया के साथ बीच में फंसे हुए हैं। वे बहुसंस्कृतिवादी दृष्टि के समर्थक तो हैं पर उसका प्रचार करने वाले नेताओं को वितृष्णा की दृष्टि से देखते हैं।

अधिकांश लोग अभी तक समझ नहीं पा रहे हैं कि बिन लादेन को इतने वर्षों तक शरण और उन्मुक्त घूमने की अनुमति वस्तुतः किसने दी थी। उस परिसर में जहाँ संगणकों पर अभिलेख पाए गए थे उनमें पर्याप्त साक्ष्य है कि पाकिस्तान सरकार, सेना ओर खुफ़िया ऐजेन्सियों का यह साझा षड्यंत्र था। पर यदि बिन–लादेन ने निजी सहायता के नेटवर्क पर विश्वास किया था तो पाकिस्तान के न्यायालयों ने उन्हें पहचानकर उन सभी व्यक्तियों को गिरफ्तार कर सज़ा क्यों नही दिलवायी जो बिन–लादेन को सहायता देते रहे। दुर्भाग्य से न्यायालयों की प्राथमिकता भी कुछ और ही रही है।

पाकिस्तान में बिन–लादेन से सम्बन्धित विमर्श इस बात पर केन्द्रित रहा है कि कैसे और क्यों अमेरिका ने उसकी प्रभुसत्ता का उल्लंघन कर बिन–लादेन को मार दिया। इस बात पर तो लगता है कि चर्चा ही नहीं हुई कि विश्व के सर्वाधिक खतरनाक आतंकवादी की उस गैरिसन–नगर एबटाबाद में जहाँ सैनिक अधिकारी बहुतायत में थे, वह पाकिस्तान की सम्प्रभुता और सुरक्षा के लिए खतरा क्यों नहीं था? आज पाकिस्तानी शायद महसूस करते हैं कि वे स्वयं आतंकवाद के एक शिकार बने हुए हैं और अमेरिकी सैनिकीकरण ने उन्हें लगातार असुरक्षित बनाया है। सिर्फ गत वर्ष में 476 बड़े आतंकवादी हमलों में 4,447 लोग मारे गए थे। पिछले दशकों में हजारों सैनिक और सुरक्षाकर्मी अधिकारी अतिरेकियों से लड़ते हुए मारे गए हैं। यह रक्तपात चाहे अन्दरूनी 'होमग्रोन' टेररिस्ट हो या जो अल–कायदा की विचारधारा से प्रभावित रहे हों, उन्हीं के द्वारा हुआ है।

पर क्या जिहादी विचारधारा के विरुद्ध शासन के किसी स्तर में लड़ने का मनोबल है? शायद नहीं। और यह स्थिति ही पाकिस्तान के स्थायित्व के लिए आज सबसे बड़ी चेतावनी है। (सुरक्षासम्बंधी) विमर्श, वार्ता या रणनीति आज उन लोगों द्वारा अपहृत कर ली गई है जो इस्लामी अतिरेकवाद के बढ़ते शिकंजे से लोगों का ध्यान बंटाना चाहते हैं।

पाकिस्तान की वह देशव्यापी मानसिकता जो आतंकवाद को सतही स्तर पर चुपचाप सहती है वह सर्वप्रथम जनरल जियाउल हक के 1977 से 1988 तक के सैनिक शासन में पनपी थी। फिर 1999 से लेकर 2008 तक जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ के शासन काल में पूरे पाकिस्तान की एक पीढ़ी ने वे पाठ्य पुस्तके पढ़ीं जिसने पाकिस्तानी राष्ट्रवाद को इस्लामी श्रेष्ठता के अनोखे और अद्वितीय रूप का समानार्थक माना।

जो भारत विरोधी विचारों से प्रारंभ होकर पश्चिमी सम्यता विरोधी दौड़ में हिस्सा लेते थे वे आज के युग के सच्चे पाकिस्तानी माने जाते हैं। सिर्फ सामाजिक और आर्थिक नीतियों की परिचर्चा में सक्रिय भाग लेने वाले पाकिस्तान के हितैषी हैं, ऐसा कभी नहीं माना गया। पहले तो अमेरिकी सहायता और समर्थन द्वारा ऐसे अतिरेकी अच्छे नागरिक माने गए पर जब अफगानिस्तान में सोवियत नियंत्रण समाप्त हो गया तब वही जब पाकिस्तान के क्षेत्रीय प्रभाव के उपकरण बने तब धीरे–धीरे पश्चिमी व अमेरिकी समर्थन उन्हें मिलना बंद हो गया। यद्यपि भारतीय नियंत्रण वाले कश्मीर में उपद्रव मचाने की उन्हें पूरी स्वतंत्रता अमेरिका व पाकिस्तानी रणनीति विशेषज्ञों द्वारा लगभग सदैव मिली थीं।

सन् 2008 के चुनावों के बाद पाकिस्तान में प्रजातंत्र की वापसी की बात स्वयं पश्चिम करता रहा था। पर चुनी हुई सरकार पहले दिन से ही आन्तरिक कलह के कारण लड़खड़ाने लगी। हर प्रकरण पर न्यायिक सक्रियता ने भी सरकार की नाक में दम कर दिया था यद्यपि यह सक्रियता अतिरेकवाद व आतंकवाद के अतिरिक्त दूसरे मुद्दों तक ही सीमिति थीं।

जनरल मुशर्रफ के अपदस्थ किए जाने के पहले अधिवक्ताओं का व्यापक आन्दोलन काफी सफल हुआ था जो उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को निकाले जाने पर प्रारंभ किया था। पर गत् चार वर्षों में सर्वोच्च न्यायालय ने अपनी सारी ताकत सरकार को हटाने में लगाई है। पुराने प्रकरण फिर खोले जा रहे हैं। जिनमें सन् 1990 के भ्रष्टाचार के प्रकरण भी हैं। पर इसी दौरान किसी बड़े आतंकवादी नेता को कोई सजा नहीं मिली। दूसरी ओर अनेक अमेरिकी नेता उनकी विचारधारा के प्रति सहानुभूति के नाम पद छोड़ दिए गए।

यह इसलिए हुआ कि जनरल मुशर्रफ के पतन के बाद अधिवक्ताओं का आन्दोलन दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। एक समूह का नेता कानून के शासन पर बल देता था पर दूसरा न्यायपालिका को चुने हुए नेताओं के प्रतिद्वन्दी के रूप में खड़ा करना चाहता था। 'न्यायपालिका का राजनीतिक गठबंधन भी स्पष्ट हो रहा है। इस बीच मीडिया जो प्रजातंत्र के लिए अरसे से स्वतंत्रता की मांग करता रहा था सिर्फ सत्तारूढ़ दल को निशाना बना रहा है, जिहादी विचारधारा के समर्थकों को नहीं। यह पाकिस्तान की खुफिया ऐजेन्सियों के लिए एक सुविधाजनक स्थिति है जो अब आतंकवादी समूहों के स्थान पर नागरिक शासन पर नजर रखने में व्यस्त हैं। यदि पाकिस्तानी सरकार द्वारा छोड़े गए आतंकवादियों के विरुद्ध फिर न्यायपालिका सक्रिय होती है तभी पाकिस्तान संकट से मुक्त हो सकेगा, यह स्पष्ट है। पर भय का वातावरण आतंकियों के पक्ष में है। नेताओं की खोखली घोषणाओं से कुछ न होगा आज यह सब जानते हैं।

–333 ईस्ट, 56 वीं स्ट्रीट
एपार्टमेंट–6जी न्यूयार्क एन.वाई–1002

☞ *पृष्ठ 4 का शेष*

सार्वदेशिक सभा द्वारा ...

बालमुकन्द, सोहन लाल पाठक आदि की नसों में खून खौलाने वाले दयानन्द के विचार थे।

आर्य मित्रों!

पूज्य महात्मा हंसराज ने पंचसकारों में स्वदेशी का मंत्र दिया। हैदराबाद सत्याग्रह में आर्यों के की विजय दुंदुभि भारतमाता के माथे का चंदन है।

दुनिया गवाह है कि एक आर्य की गवाही से मुकदमें का फैसला हो जाता था। आर्यों के चरित्र, बलिदान व समर्पण से आज हम इस मुकाम तक पहुंचे हैं।

स्वामी दयानन्द ने कहा था......

''सत्य के ग्रहण करने व असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।''

''भूत भी महान था
भविष्य भी महान हैं
संभाल लें यदि जो वर्तमान है।

आज पहले से अधिक रूढ़िवाद, पाखण्ड अंध विश्वास फैला हुआ है। ढूँढ़ने चलें तो आज हर ईंट के नीचे कोई भगवान या बापू ईशकृपा बेचता हुआ मिल जाएगा।

शेष पृष्ठ 7 पर ☞

शुभ धन ऐश्वर्य की प्राप्ति जागृत् को ही होती है

● डॉ. अशोक आर्य

आज का मनुष्य जीवन में अतुल धन सम्पति की अभिलाषा रखता है। धन सम्पत्ति की अभिलाषा ने उसका जीवन क्रम ही बदल दिया है। इस जीवन क्रम के परिवर्तन के साथ ही उसकी आवश्यकताएं भी निरंतर बढ़ती व बदलती ही चली जा रही हैं। एक सामूहिक परिवार में जहाँ एक रसोई में केवल एक चाकू होता था, वहाँ आज परिवारों के विभाजन के पश्चात भी एक रसोई में कम से कम बीस प्रकार के तो केवल चाकू ही हो गए हैं। एक छीलने वाला, एक काटने वाला, एक डबल रोटी पर जैम लगाने वाला...... इस प्रकार जहाँ केवल चाकुओं की ही इतनी संख्या बढ़ गयी है, वहाँ शेष सामग्री की गणना करें तो आज एक छोटे से परिवार के पास आकूत सामग्री की आवश्यकता हो गयी है। आवश्यकता की क्या कहें, आज तो अनावश्यक सामग्री पर धन पानी की भाँति बहाया जा रहा है। इसी सामग्री की एक प्रतिस्पर्धा सी चल रही है। एक के पास, एक कपडे धोने की मशीन है तो उसके पडौसी का प्रसास होता है कि वह ऐसी मशीन लावे, जिस में कपडे सूख भी जावे ताकि वह पडौसी को पीछे छोड़ सके। इस अवस्था में अन्य पडौसी चाहता है कि वह उसे भी पीछे छोड़ कर ऐसी मशीन लावे जो न केवल कपड़ों की धुलाई व सुखाने का कार्य करे अपितु प्रैस भी कर देवे। इस अंधी दौड़ ने धन की आवश्यकता को और भी बढ़ा दिया हैं। धन कर इय अंधी दौड़ नें परिवार, पास पडोस व रिश्तों को भी भुला दिया है। आज का मानव साम, दाम, दंड, भेद का प्रयोग केवल धन प्राप्ति में ही करना चाहता है। धन की इस अंधी दौड़ के कारण संसार में आपसी लडाई, झगड़ा,कलह क्लेश में निरंतरवृद्धि हो रही है। इस से बचने का एकमेव उपाय है पवित्र धन। यदि हम ऋग्वेद व साम वेद में वर्णित विधि से शुद्ध धन को अपने उपभोग के लिए एकत्र करेंगे तो हम निश्चय ही शांत व सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे। आओ हम वेद की इस भावना का अध्ययन करे। वेद मन्त्र का मूल पाठ इस प्रकार है:–

अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते,
अग्निर्जागार समु सामानी यन्ति।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह,
तवाहास्मी सख्ये न्योकाः।। ऋग्वेद 5.44.15 सामवेद 1827 ।।

वेद की ऋचााएं ऐसे व्यक्ति को ही पसंद करती है। जो जागृत अवस्था में है। अग्नि जागता है। तो उसके पास सामवेद कि ऋचाएं आती हैं। इस जागृत अग्नि को ही सोम कहता है कि मैं तेरी मित्रता में प्रसन्नचित व सुखपूर्वक निवास करूँ।

मन्त्र तथा इसके भावार्थ से एक बात स्पष्ट होती है कि वह सोम रूप परमात्मा उसके साथ ही सम्बन्ध रखना चाहता है, जो सदा जागृत रहता है। जो दिन में भी सोया रहता है, उसका कोई साथी नहीं बनना चाहता। इस का कारण भी है। जो दिन में सोया रहता है अर्थात् जो पुरुषार्थ से भागता है, मेहनत से भागता है, वह कभी धन ऐश्वर्य नहीं पा सकता। जिसके पास, धन ऐश्वर्य नहीं है, उसके मित्र कभी प्रसन्न व सुखी नहीं रह सकते। इस कारण इसकी मित्र मंडली बन ही नहीं पाती। आज के युग में तो मित्र होते ही धन के स्वामी के हैं, गरीब को कौन चाहता है? हितोपदेश में भी यही बात बतायी गयी है। कि :–

उद्योगिनं पुरुशासिन्हामुपैती लक्ष्मी हितोपदेशे प्रस्ता. 31

इसका भाव है कि संसार में वही सफल होता है, वही उन्नत होता हे, वहीं आगे बढ़ता है, जो उद्योग करता है, जो पुरुषार्थ करता है। पुरुषार्थ ही सुखी जीवन का आधार है। जो पुरुषार्थी नहीं उसके पास धन नहीं, जिसे के पास धन नहीं, उसके पास मित्र नहीं, यह बात भी संस्कृत के श्लोक में स्पष्ट कही गयी है:–

आलसस्य कुतो विद्या, अविदस्य कुतो धनं।
अधनस्य कुतो मित्रं अमित्रस्य कुतो सुखं।।

श्लोक से स्पष्ट है कि आलसी कभी अच्छी विद्या नहीं पा सकता। विद्या के बिना शुद्ध धन कि प्राप्ति नहीं होती, जिसके पास धन नहीं, उसके मित्र भी नहीं बनते तथा उस के सुख–दु:ख में साथ देने के लिए मित्र ही नहीं हैं, वह सुखी कैसे रह सकता है? अर्थात् वह सुखी कभी नहीं हो सकता। इस लिए हे मनुष्य, उठ! पुरुषार्थ कर तथा आकूत धन कमा। शुद्ध धन ही तुझे सच्चा सुख देगा। इस तथ्य का रामचरित मानस में भी बड़े ही सुन्दर शब्दों में इस प्रकार बताया गया है:–

सकल पदार्थ है जगमाहीं,
करमहीन नर पावत नाहीं। राम चरित मानस

रामचरित मानस भी तो यही ही कह रहे है कि शुद्ध ऐश्वर्य का स्वामी वही व्यक्ति बन सकता है जो कर्म करता है। बिना कर्म के, बिना पुरुषार्थ के कोई धन एश्वर्यों का स्वामी नहीं बन सकता। यहाँ भी कर्म करने, मेहनत करने, पुरुषार्थ करने पर बल दिया गया है। बिना मेहनत के हम कुछ भी नही पा सकते। यहाँ तक कि भोजन सामने पड़ा है, जब तक पुरुषार्थ कर हम उसे अपने मुँह में नहीं रख लेते तब तक हम उस भोजन से तृप्त नहीं हो सकते।

हम जानते हैं कि मनुष्य उस परम प्रभु की सन्तान है। जिस परमात्मा की यह मानव सन्तान है, वह परमात्मा संसार के समस्त धन एश्वर्य का स्वामी है, मालिक है अधिपति है इस आधार पर यह मानव उत्तराधिकार नियमोक आधीन अपने पिता कि सर्व सम्पति को पाने का अधिकारी है। मानव केवल उत्तराधिकार के नियम के अधिकार को ही न समझे अपितु इस अधिकार के साथ उसका कुछ कर्तव्य भी जुड़ा है, उसे भी समझे। जब तक वह अपने कर्तव्य को नहीं समझता, तब तक उतराधिकार से प्राप्त इस सम्पति से उसका कुछ भी कल्याण नहीं होने वाला क्योंकि वह पुरुषार्थ से यदि इस सम्पति को नहीं बढ़ाता, उस की यथोचित सुरक्षा नहीं करता तो कुछ ही समय में वह पुनः सम्पत्ति विहीन हो जावेगा। इसलिए सम्पत्ति देते हुए प्रभु ने मनुष्य को यह भी उपदेश दिया है कि यदि तू ठीक ढंग से इस सम्पत्ति का रक्षक बनेगा तथा इसे बढ़ाने के लिए परिश्रम करेगा तो तेरा व तेरे परिवार का जीवन सुखी होगा, यदि तू ऐसा पुरूषार्थ नहीं करेगा तो यह अतुल धन तेरे पास बहुत समय तक रहने वाला नहीं।

मन्त्र के इस भाव से जो एक तथ्य उभर कर सामने आता है वह है कि मनुष्य जन्म के साथ ही अपार धन ऐश्वर्य का स्वामी बन जाता है। उस परमपिता परमात्मा ने जन्म के साथ ही उसे जो धन दिया है, उसकी वृद्धि करना इस मनुष्य का परम कर्तव्य भी है। इस सम्पत्ति को वह कैसे सुरक्षित रखे, इस का भी उपाय इस वेद मन्त्र में दिया है। मन्त्र कहता है कि इस सम्पत्ति को सुरक्षित रखने के लिए शुद्ध वृत्तियों को अपनाना होगा, क्योंकि शुभ वृत्तियां धन को सुरक्षित रखती हैं तथा अशुभ वृत्तियां इस का नाश भी कर देती हैं। हम प्रतिदिन देखते भी है कि जिस मनुष्य के पास उत्तराधिकार मे कुछ सम्पति है, वह शुभ वृत्तियों में रहते हुए उस धन की रक्षा करने में सक्षम होता है। तथा पुरुषार्थ से इसे बढ़ाने में भी सफल होता है। किन्तु धन पा कर जो व्यक्ति अभिमानी हो जाता है। इस धन से किसी की सहायता नहीं करता तथा रक्षक के स्थान पर भक्षक बन कर बुरी वृत्तियों में लिप्त हो जाता है, मांस शराब का सेवन, वैश्या–गमन आदि दुराचारों में फँस जाता है, तो न केवल उसके परिवार में कलह बढ़ती है अपितु कुछ ही समय में धन उसका साथ छोड़ जाता है। इस लिए तो मन्त्र कहता है कि हे मानुष! तुझे जो आकूत धन दिया है तू उस की रक्षा करते हुए उसे बढाने के भी उपाय कर, पुरूषार्थ कर।

अतः ईश्वर की इस दी सम्पति को, धन को बचाए रखने के लिए तथा इसे बढ़ाने के लिए हमें अपने में शुभ वृत्तियों को, अच्छी आदतों को बढ़ाना होगा, जितने भी शुभ विचार हैं, उन्हें अपने जीवन में धारण करना होगा। शुभ विचार, सत्य कर्म तथा शुभ वृत्तियां जहाँ है वहाँ ही लक्ष्मी अर्थात् धन ऐश्वर्य का निवास है। पापाचरण, कुमार्ग गमन, मद्य मांस सेवन आदि अशुभ वृत्तियांलक्ष्मी अर्थात् धन ऐश्वर्य के नाश का कारण होती है। यही कारण है कि वेद हमें आदेश देता है कि हे मनुष्य! अपने जीवन में पाप वृत्तियों को प्रवेश न करने देना, शुभ वृत्तिओं को खूब फलते फूलने का अवसर देता है। यदि तू अपने जीवन में ऐसा करेगा तो तू ईश्वर से प्राप्त आकूत धन एश्वर्य से सुखी जीवन व्यतीत करेगा तथा तेरा परिवार व तुझ पर आश्रित लोग भी सुखी रहेंगे। यह धन सम्पदा पूर्णतः सुरक्षित रहेगी तथापि निरंतर बढ़ती ही चली जावेगी, जिससे तेरे सुख भी बढ़ते ही जावेंगे। यदि तू ऐसा नहीं कर इस के उलट पापाचरण की ओर बढ़ेगा तो धीरे धीरे तू इस सम्पति से वंचित हो दु:खों के सागर में डूब जावेगा। अतः उठ शुभ विचारों को अपना, शुभ आचरण कर तथा ईश्वर से प्राप्त इस सम्पत्ति की वृद्धि के उपाय कर सुख का मार्ग पकड।

मण्डी डबवाली
104 शिप्रा अपार्टमेंट कौशाम्बी,
गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलवाती: 09718528068

पारिवारिक माधुर्य को विदाई देता जमाना

● गिरीश त्रिवेदी

जमुना काकी की जेठानी जिसे घर के ओर मोहल्ले भर के लोग 'धाजी' कह कर बुलाते हैं। गत कुछ समय से विचारों में खोई–खोई सी रहती है। उम्र में धाजी और जमुना साठ ओर पच्चास के बीच की होगी। दोनों समझदार भी हैं। और आपस में गहरी मित्र भी है। आखिर धाजी किन विचारों में खोई हैं जानने लिए जमुना धाजी के पास जा बैठी ओर पूछा। तभी उनकी दो पोतिया सज–संवर कर उनके सामने से गुजरी जो कि कॉलेज जा रही थी। उन्हें ठीक से घूरने के बाद धाजी बोली –' देखा जमाना, न जाने कहाँ–कहाँ देख कर आती हैं और अब ऐसे निर्लज्ज कपड़े पहन कर कॉलेज में लडकों के बीच घूमेगी। कोई पुरूष स्लीव लेस या बडे गले का या अंग प्रदर्शन वाला कोई भी परिधान नहीं पहनता तो इन्हें ही ऐसा होकर धूमने की क्यों सूझती है?

धाजी की बात सुन अपने गुदगुदाते दिल से जमुना मुस्कुराकर बोली – 'जमाने के साथ तो चलना पड़ता है। समय परिवर्तनशील है। आज का वातावरण बड़े स्वच्छन्द हो चला है ये इंटरनेट, टी वी चैनल और सिनेमा इनसे हमारी युवा पीढ़ी कैसे बच सकती है? अपने पूर्वजों के बताये मार्ग को ज्यों का त्यों कैसे अपनाया जा सकता है। रहन–सहन, पोशाक और सामाजिक जीवन में परिवर्तन तो आना ही है।

धाजी पर जमुना की बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा वह बड़ी गंभीरता से बोली – 'हर जमाने ने स्त्री को ही बलि का बकरा बनाया है। जमाने की त्रुटियों की सजा सदा स्त्री ही क्यों भोगे? तब जमाने में अनाचरण न फैले इस डर से स्त्री को पति के शव के साथ ही जीवित जला दिया जाता था। फिर अबला को दहेज के लिए भांति–भांति की अमानवीय यातनाएं दी जाने लगी तब उसे बेचारी का रक्षक इस दुनिया में कोई नहीं होता हैं, न पति न माता–पिता सब दूर खड़े तमाशा देखते है। ओर अंततः स्त्री को दहेज के लिए भी जलाकर दर्दनाक मौत की सजा दे ही दी जाती है।' बोलते –बोलते धाजी की आखें भर आई। उन्हें पोंछते वे आगे बोली। 'दहेज का भूत अब भी समाज में जीवित हैं और इसके डर से अब बहुतों ने कन्याओं को जन्म देना ही बन्द कर दिया है। यह भी माता–पिता द्वारा स्त्री पर किया गया क्रूर अत्याचार है। दहेज के भय से अपनी ही बिटिया का एक एक अंग को नोंचकर टुकड़े–टुकड़े करवा कर जन्म से पहले ही हत्या कर देते हैं। आज के माता–पिता। विश्व इतिहास में भी माता–पिता द्वारा इस तरह अपनी ही सन्तान को क्रूरता पूर्वक हत्या का कहीं कोई उदाहरण नहीं मिलता है।

(प्रिय पाठकों, लेखक आपसे हाथ जोड; कर प्रार्थना करता है कि आपके जीवन में कभी भी भ्रूण हत्या का निर्णय लेने का समय आये तो तर्क–वितर्क में न पड़ें। मन बड़ा स्वार्थी है। मन के मते न चल कर भ्रूण हत्या के जघन्य पाप से बचे रहें, चाहे जीवन में आगे इस कारण कई कष्ट ही क्यों न झेलने पड़ें। लड़का –लड़की या अज्ञात किसी भी सन्तान का गर्भपात न करवायें। धन्यवाद।

सुनते–सुनते जमुना को कुछ याद आया तो वो बोल पड़ी 'हाँ बाबा रामदेव भी कहते हैं आज भी भारत में सैंकड़ों–स्त्रियाँ दहेज के लिए जला दी जाती हैं ओर प्रतिदिन सैकड़ों स्त्रियों के साथ बलात्कार करके उनकी हस्या कर दी जाती है। ऐसे हत्यारों को मौत की सजा का कानुन बनाने की बात वे करते हैं सही कहूँ तो महिला आरक्षण बिल से भी ज्यादा अनिवार्य तो यह कानून हैं ताकि स्त्रियों पर अत्याचार थमें। महिला आरक्षण कानून का दुरूपयोग तो गुंडे अपराधी अपनी पत्नी के कंधें पर बन्दूक रख कर अपना मन चाहा काम सिद्ध करने में करेंगे। जैसे एक माफिया गुण्डा, हत्यारा भ्रष्टाचारी अपनी खराब छवि के कारण स्वयं चुनाव न लड़कर ही साफ–सुथरी छवि वाली पत्नी को चुनाव जीता कर उसकी भोली सूरत की आड़ में यह दरिंदा देश को बेखोंफ लूटता रहेगा।

'तू ठीक कह रही है। जमुना' धाजी ने बात को ठीक से समझा ओर कहती रही – 'इस तरह तो स्त्री सशक्त होना मुश्किल ही लग रहा है। स्त्री को अब स्वयं को स्वंय ही मजबूत करना होगा। उसे दुनिया की उल्टी सीधी चालों को स्वयं समझना होगा। उसे अब अंध–विश्वास ओर ग्लेमर से भी बचना होगा। आज का तथाकथित अंधकारभय विकासवाद भी स्त्री से स्त्रीत्व छीन रहा है। भारत में स्त्री ही परिवार का ममतामय केन्द्र (धुरी) है हमारे पारिवारिक संबंध सुसंस्कृत, भावनिष्ठ और त्यागपरक हैं, जो अब पश्चिम की हवा चल रही हैं उसके रहते हमारे सभी संबंध भी कुलषित हो जाएंगे। पति –पत्नी की विश्वसनीयता समाप्त होकर दो प्रतिद्वन्द्वियों के रूप में बदल जायेगी। बूढे माता–पिता श्रद्धा के केंद्र थे। घर में विराजमान साक्षात भगवान थे। उन्हें इस पश्चिम की हवा ने घर से उखाड़कर वृद्धाश्रमों में पहुँचना प्रारंभ कर दिया है। 'लिव इन रिलेशनशिप' का भौंडा खिलवाड़ क्या पूरी भारतीय संस्कृति को ही बदल कर नहीं रख देगा?

बोलते–बोलते धाजी अचानक चुप को गई और दोनों स्त्रियां ही सन्नाटे मे बैठी रहीं। तभी कुछ देर बाद धाजी फिर बोली – हमारी पश्चिमी मानसिकता को प्रधानता देने वाली सरकार पाठ्य पुस्तकों में योग शिक्षा न देकर यौन शिक्षा देने को आमादा है। हमारे छोटे –छोटे 12–14 वर्ष की आयु के बालक–बालिकायें जब टीवी, इंटरनेट और स्कूल सब तरफ काम और ग्लेमर को पाएंगे तो वे इससे किस तरह बच पाएंगे। पश्चिम की तर्ज पर भारत के भी स्कूली छात्र–छात्रायें स्वेच्छा से शारीरिक संबंध बनाएंगे।

बात इतनी ही नहीं है। बात है शिष्टाचार की जमाने ने गुरू–शिष्य के नाते को भी शर्मशार कर दिया है। हमारी संस्कृति में सर्वाधिक सम्मानित स्थान गुरू का है। अब उसका सम्मान धू–धूसरित हो चुका है। चलती क्लास से लडके –लड़कियां बेशर्मी से बाहर निकल जाते हैं और अध्यापक कुछ कह नहीं पाता। उसे शांति से जीवन यापन करना है तो वह छात्रों से पंगा नहीं लेता। सुना है छात्र–छात्रा क्लास छोडकर केन्टिन ओर फिर होटलों में चले जाते हैं और स्वास्थ्य को हानिकारक गोलियां के रहते भी जब चूक हो जाती है तो गर्भपात केन्दों में भी जाते नहीं हिचकते।''

जमुना काकी अपनी जेठानी से ये सब सुनते–सुनते शर्म से सिकुडती जा रही थी। आखिर बात बदलने के लिए वह बीच में बोल ही पड़ी यह सब हमारी संस्कृति को मटियामेट होता हम देख रहे हैं यह यों ही नहीं हो रहा है। मुझे लगता है इसके पीछे गहरा विदेशी षड्यंत्र है, जिसे सरकार के हाथों चलाया जाता है। सरकार चाहे तो भारत की चिर–प्राचीन कल्याणकारी संस्कृति का प्रचार–प्रसार आसानी से कर सकती हैं और ऐसे विनाशकारी उपद्रवों को भारत में आने से रोक सकती है लेकिन हमारी सरकार है कि भारत को इंडिया बनाने में जुटी पडी हैं, ताकि इग्लैंड की हर बुराई से इंडियन वेल अप टु डेट हो जाय। मेरा मानना है कि पश्चिमी संस्कृति की पक्षधर पार्टी को बोट देकर भारतमाता के साथ गद्दारी ओर धोखा करने के समान है।'

'हाँ जमुना' बीच में ही धाजी बोल पड़ी' पाश्चात्य दृष्टिकोण से हमारे देश में बने कुछ कानूनों से भी हमारे परिवारों का माधुर्य छिनता जा रहा है। पिता की संपत्ति में बैटी का हिस्सा भाई–बहन को जानी दुश्मन बना रहा है, अब देख जमुना हमारी यह ससुराल की हवेली ओर हमारे खेत क्या हमारे नहीं है। हम दोनों ससुराल की पूरी संपत्ति की मालकिन हैं और ऊपर से पीहर का हिस्सा लेने चली जाय, मैं तो सोच भी नहीं सकती। पति का जो कुछ है वही हमारा है, पिता का नहीं यह,ी हमारे लिए सही है।

किधर–किधर तो तो माँ–बाप बेटियों को तलाक के लिए उकसाते हैं, और अंततः तलाक दिलवाकर उनसे गुजाराभत्ता आदि की आड़ में बेटी का दोहन कर रहे हैं, इसके अलावा समलेंगिक विवाह आदि के कानून हमारी संस्कृति को मटियामेंट करने का क्या दुष्प्रयोजन नहीं है। हमारी संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ट संस्कृति है तो हम इसे छोड़ने पर आमादा क्यों हैं?धाजी बोलते–बोलते रूक गयी ओर फिर बोली – चल जमुना आज बहुत बातें हो गई, अब उठो हम अपना–अपना काम करते हैं।'

–496–शनिवार पेठ
इलिना आपार्टमैण्ट
पुणे–411030

☞ पृष्ठ 5 का शेष

सार्वदेशिक सभा द्वारा ...

देश की अस्मिता को चुनौती दी जा रही है। भ्रष्टाचार, आतंकवाद, भाई–भतीजावाद, विदेशी व्यापारी हमें नाश करने पर तुले हैं। आज का मानस बड़ी कातरता से आपकी ओर निहार रहा है।

आर्यो!

मैं खून के आँसू भरकर, चीख–चीख कर, कह रहा हू, आज हमारा नेतृत्व विखण्डित है, व्यामोहग्रस्त है। हमारे पूज्य नेता कुर्सी लड़ाई लड़ रहे है। इससे आय्र समाज का नुकसान हो रहा है। हमारी छवि को धक्का पहुंच रहा है। हम अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं। मैं आर्य समाज का एक सेवक हूँ। टुकड़ों में बंटी सभाओं में मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभी व डी.ए.वी परिवार में कुर्सी के लिए कोई मुकदमा नहीं है। डी.ए.वी. आज देश ही नहीं, विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा की संस्था है। डी.ए. वी. में भी चुनाव हुआ, परंतु चुनाव के बाद हमारा परिवार पुनः पहले से सौ गुणा अधिक शक्ति से सेवा में समपिर्त हो गया।

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

वैदिक वाङ्गमय की चर्चा सामवेद

● सुशील वर्मा

सामवेद के बारे में श्री कृष्ण गीता में कहते है ''वेदानां सामवेदोऽस्मि'' (गीता 10/22) शतपथ और गोपथ ब्राह्मण में कथन है कि सारे वेदों का रस अथवा सार सामवेद है।''सर्वेषा वा एष वेदानां रसो यत् साम'' (शतपथ 12/8/3/23, गोपथ 2/5/77) इसी प्रकार 'बृहद्देवता' का कथन है कि जो सामवेद को जानता है वही वेद के रहस्य को जान सकता है।

छान्दोग्योपनिषद् में ऋचाओं का सार सामवेद कहा गया है और सामवेद का सार उद्गीथ (प्राण, ओ३म् ओंकार)

या ऋक तत्साम (छा.उ. 1/3/4) जो ऋचा है वह साम है और ऋचा वाणी का रस है ऋचा का रस साम है और साम का रस उद्गीथ।'' वाचः ऋग्रसः ऋचः सामरसः साम्नः उदगीथोरसः (छा. उ. 1/1/2)

अथर्ववेद में वर वधू से कहता है कि तूँ साम है और मैं अम हूँ ''अमोऽहमस्मि सा त्वम्''

साम अथवा सामने का अर्थ हैं '' गीतियुक्त मन्त्र'' ऋग्वेद की ऋचाएँ जब विशिष्ट गान से गाई जाती हैं तो उन्हें साम अथवा सामन् कहते हैं।'' गीतिषु सामाख्या'' (पूर्व मीमांसा 2/1/36) अर्थात गीति (गान) को साम कहते है। साम–सा+अम) साम, स यासा का अर्थ है ऋचा और अम अर्थात गीति। सामवेद में कुल 1875 मन्त्र है ओर इसके दो भाग है।

1. पूर्वार्चिक
2. उत्तरार्चिक आर्चिक का अर्थ है – ऋचाओं का समूह

1. पूर्वार्चिक :– इसके चार काण्ड है।
1. आग्नेय 2. ऐन्द्र 3. पावमान
4. आरण्य काण्ड

इसके अतिरिक्त परिशिष्ट रूप में महानाम्नी आर्चिक

1. आग्नेय काण्ड का देवता (विषय – Subject Matter) अग्नि, 114 मन्त्र
2. ऐन्द्र काण्ड का देवता इन्द्र, मंत्र संख्या 352
3. पावमान काण्ड – देवता सोम, मन्त्र संख्या 119
4. आरण्य काण्ड – इन्द्र अग्नि एवं सोम देवता, मन्त्र संख्या 55

महानाम्नी आर्चिक जिसका देवता इन्द्र है। इस परिशिष्ट में मात्र 10 मन्त्र हैं।

इस प्रकार पूर्वार्चिक में कुल 650 मन्त्र है। 6 अध्याय एवं परिशिष्ट हैं।

आग्नेय, ऐन्द्र ओर पावमान काण्ड की ऋचाओं को ग्राम–गान कहते हैं, क्योंकि इनका गान ग्रामों में होता था और आरण्य काण्ड की ऋचाओं का गान वन (जंगल) में होने के कारण 'अरण्य गान' नाम दिया गया। उत्तरार्चित में 21 अध्याय और मंत्र संख्या 1225 है। इस प्रकार पूर्वार्चिक में 650 और उत्तरार्चिक में 1225 अथवा कुल संख्या 1875 है। सामवेद में ऋग्वेदीय मंत्रों की संख्या 1771 है और 104 मन्त्र सामवेद में नवीन (ऋग्वेद के अतिरिक्त) हैं।

ऋग्वेद के 1771 मन्त्रो में से 267 पुनरूक्त मन्त्र और इसी प्रकार सामवेद के नवीन 104 में से 5 पुनरुक्त मन्त्र है।

कई भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार सामवेद की स्वतंत्र सत्ता नहीं है। वास्तव में यह धारणा भ्रान्त एवं निर्मूल है।

1. तरमाद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
ऋग् 10/90/9
2. यो जागार तमु सामानि सन्ति।
ऋग् 5/44/4
3. यज्ञन्य सामागामुक्थ शासाम्।
ऋग् 10/107/6
4. श्रवत्साम गीयनामन्।
ऋग् 8/81/5
5. अंगिरसां सामाभिः स्त्यामानाः
ऋग् 10/107/2

जो ऋग्वेद को ही विश्व का सबसे पहला ग्रन्थ मानते हैं। उन्हें यह उदाहरण प्रमाणित करते हैं कि सामवेद का वर्णन ऋग्वेद में भी है अर्थात सभी वेदों को प्रादुर्भाव एक समय ही हुआ जैसा कि महर्षि दयानन्द का मत है। मनु स्मृति भी उसका समर्थन करती है।

सामवेद में ऋचाओं का कही पाठ भेद है। कहीं अपूर्ण ऋचा है।

1. ''अपो महि व्ययति'' – ऋग (7/81/1) यही ऋचा सामवेद में ''अपो मही वृणुते'' (303)
2. इदं विष्णु : पांसुरे (ऋग् 1/22/17) सामवेद में पोसुले (1669)

इस प्रकार सामवेद स्वतन्त्र वे है।

सामवेद की शाखाएँ :– पतञ्जलि के महाभाष्य में सामवेद की 1000 शाखाओं का वर्णन है। परन्तु आजकल केवल तीन शाखाएँ ही उपलब्ध हैं।

1. शाखा –1. कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय

कौथुमीय और राणायनीय में 1875 मंत्र है वहीं जैमिनीय में 1687 अर्थात् 188 मन्त्र कम है।

उपलब्ध ग्रन्थ

1. शाखा –कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय
2. ब्राह्मण – तांड्य (पंचविंश/प्रोढ़), षड्विंश ब्राह्मण, सामविधान, आर्षेय, जैमिनीय (आर्षेय), जैमिनीय तलवकार, जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण।
3. आरण्यक कोई नहीं।
4. उपनिषद् छान्दोग्योपनिषद्, केनोपनिषद्।
5. कल्पसूत्र क. श्रौत सूत – जैमिनीय, लाट्यायन, निदान सूत्र, उपनिदान सूत्र आदि।

ख. गृह्य सूत्र – गोभिल, कौथुम, खादिर, गौतम, छान्दोग्य, छन्दोग, गृह्यसूत्र आदि।

सामवेदीय संगीत

जिस प्रकार ऋग्वेद में उदात्त स्वरित और अनुदात के लिए क्रमशः कोई चिन्ह नहीं, खड़ी रेखा और पड़ी रेखा होती है। उसी प्रकार सामवेद में उदात्त का चिन्ह। स्वरित के लिए 2, और अनुदात के लिए 3 संख्याएँ लिखी जाती है। ऋग्वेद में – उदात्त, स्वरित, अनुदात्त तद्नुसार सामवेद में क्रमशः 123

इसी प्रकार सरगम के लिए नारदीय शिक्षानुसार (निम्न अंक होते है।)

सामवेदीय अंक
बीणा के स्वर
लोक में संगीत स्वर

1. प्रथम मध्यम म
2. द्वितीय गान्धार म
3. तृतीय ऋषभ रे सा रे गा मा पा धा नि
1 2 3 4 5 6 7
4. चतुर्थ षड्ज स
5. पंचम निषाद नि
6. षष्ठ धैवत ध
7. सप्तम पंचम ष

यहाँ पर सामवेद का प्रथम से प्रारम्भ होकर आवरोह की ओर म ग रे स नि ध प के क्रम में रहता है।

सामवेद में 1 2 3

इस प्रकार नारदीय शिक्षा में स्वर सात हैं। षड्ज (स), ऋषभ (रे), गान्धार (ग), माध्यम (म), पंचम (प), धैवत (ध), निषाद (नि)

ग्राम तीन – मन्द्र (निम्न) मध्यम, तीव्र (उच्च)

मूर्च्छनाएँ 21 हैं :– 7 स्वर × 3 ग्राम

तान 49 हैं :– 7 स्वर × 7 स्वर

सामगान के चार भेद :–

1. ग्रामगेयगान – इन्हें प्रकृतिगान भी कहते हैं यह गान सार्वजनिक स्थानों पर गाया जाता रहा है।
2. आरण्यगान – यह बनों या पवित्र स्थानों पर गाए जाते थे। इन्हें 'रहस्य' गान भी कहते थे।
3. ऊहगान – यह सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसरों पर गाए जाते थे। पूर्वार्चिक से सम्बद्ध उत्तरार्चिकों का गान इस विधि से होता था।
4. ऊहयगान अथवा रहस्यगान – रहस्यात्मक होने के कारण सर्वसाधारण के सामने इसका गान निषिद्ध था। सामगान की पाँच भक्तियाँ (विभाग)

पाँच भक्तियाँ ये हैं – प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव और निधन। हिंकार और ओंकार जोड़ने पर ये सात भक्तियाँ होती है।

हिंकार प्रस्ताव से पहले और ओंकार उद्गीथ से पहले जोड़ा जाता है। मंत्रों का गान ऋत्विज – प्रस्तोता, उद्गाता, और प्रतिहर्त्ता द्वारा किया जाता है।

उदाहरणार्थ : अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि वर्हिषि।।
साम पूर्व 1/1

भक्ति	गायक	मन्त्रांश
1. हिंकार	प्रस्तोता	हुँ
2. प्रस्ताव 1	प्रस्तोता	ओग्नाइ
3. ओंकार	उद्गाता	ओ३म्
4. उद्गीथ 2	उद्गाता	आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये
5. प्रतिहार 3	प्रतिहर्त्ता	नि होता सत्सि बर्हषि ओ३म्
6. उपद्रव 4	उद्गाता	नि होता सत्सि ब
7. निधन 5	तीनों मिलकर	र्हिषि ओ३म

छान्दग्योपनिषद् में सात प्रकार के साम का वर्णन है। उद्गीथ (ओ३म) की महिमा बहुत विस्तार रूप में वर्णित है। सामवेद का प्रतिपाद्य विषय – सामवेद मुख्यतः उपासना का वेद है। इसमें अग्नि, इन्द्र और सोम आदि देवों की स्तुति, प्रार्थना और उपासना है। सोम शब्द सोम्य गुणों का सूचक है और इन्ही सोम्य गुणों की प्राप्ति के लिए सामगान किया जाता है। यज्ञों में उद्गाता मंत्रों का गान करता है। इस प्रकार यजुर्वेद और सामवेद में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। चूँकि गान में प्रयुक्त मन्त्र ऋचा होती है, जो कि ऋग्वेद से सम्बधित है। इस प्रकार सामवेद का ऋग्वेद और यजुर्वेद का आपसी सम्बद्ध हैं आध्यात्मिक दृष्टि से सोम ब्रह्म, शिवत्व अथवा परमात्मा स्वरूप है। सामवेद का प्रारम्भ शान्त रस से होता है, परन्तु इसकी समाप्ति वीर रस से है। वहाँ इन्द्र योद्धा रूप में प्रस्तुत है। अन्त में ''भंद्रं कर्णेभिः'' तथा ''स्वस्ति न इन्द्रो'' से यह वेद समाप्त होता हे। अर्थात् शिव शान्त स्वरूप, शक्ति रूप और रूद्र रूप का समन्वय इस वेद में प्रतिपादित किया गया है।

मो. 09217832632
एम.ए. वैदिक साहित्य
गली मास्टर मूल चन्द,
फाजिल्का 152123

दीपावली, महर्षि दयानन्द और हमारा कर्त्तव्य

● पं. नन्दलाल निर्भय

वेद श्रावणी उपाकर्म विजय दशमी, दीपावली, नवशसेष्टी यज्ञ एवम् होली ये चार आर्य पर्व हैं। ये महापर्व आर्यवर्त (भारत) में प्राचीन काल से मनाये जाते है।

उपरोक्त पर्वो का हमारे जीवन से विशेष सम्बन्ध है तथा इनका भारी महत्व है। वेद श्रावणी उपाकर्म को ब्राह्मण पर्व (ज्ञान पर्व), विजय दशमी को क्षत्रिय पर्व (रक्षा पर्व) दीपावली को वैश्य पर्व (उपार्जन पर्व) तथा नव शसेष्टी यज्ञ को शूद्र पर्व (सेवा पर्व) माना जाता है। आज हम केवल दीपावली पर ही विचार करते हैं।

दीपावली एवं कार्तिक मास की अमावश्या को हर वर्ष समस्त संसार में बड़ी धूमधाम अर्थात् बड़े श्रद्धा भाव से मनाया जाता है। इस दिन प्रातःकाल–सायंकाल देव यज्ञ (हवन) किया जाता है। विद्वानों को भोजन वस्त्र आदि से सम्मानित किया जाता है। निर्बलों निर्धनों को विशेष यप से दान दिया जाता है। वैश्य लोग अपने आय–व्यय का हिसाब लगाते हैं तथा खेती व्यापार आदि से अन्न–धन पैदा करके राष्ट्र को समृद्धशाली एवम सुखम बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं। प्रत्येक ग्राम–नगर में इस त्यौहार पर मिठाईयां बांटकर नर–नारी परस्पर गले मिलते हैं।

इस पर्व के मनाने के विषय में लोगों के भिन्न–भिन्न विचार हैं। कुछ व्यक्ति कहते है कि इस दिन श्री रामचन्द्र जी लंका के महाराजा महाबलि रावण को युद्ध में धराशायी करके अयोध्या लौटे थे तथा उनके वापिस आने की खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाये थे। इसलिये इस पर्व को दीपावली अर्थात् दीपों की माला कहा जाता है। वस्तुतः यह विचार निराधार हैं, क्योंकि रामायण में साफ लिखा है कि रावण का वध चैत्र शुदि पूर्णिमा को अयोध्या लौटे थे।

कुछ व्यक्ति कहते हैं कि जैन यन के संस्थापक महावीर स्वामी का इस दिन निर्वाण हुआ था। इसीलिये यह पर्व मनाया जाता है। कुछ लोग इस पर्व को मनाने का आधार भगवान रामतीर्थ का दिवंगत होना बताते है। हमारे सिख भाई कहते हैं कि सिखों के गुरु श्री हर गोविन्द जी, दिवाली के दिन मुगलों की जेल से छुटकर आये थे। इसीलिये यह पर्व मनाया जाता है।

सज्जनो! सच्चाई तो यह है कि यह पर्व आदि काल से आर्यवर्त एवम, समस्त जगत में मनाया जाता है। आर्य समाज के संस्थापक जगतगुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी महापर्व दीवाली के दिन गायत्री मंत्र का जाप करते हुए प्राण त्यागे थे तथा अपने प्रिय शिष्यों रामानन्द आदि को आर्शीवाद देते हुए जीवनभर वेद प्रचार करके संसार को आर्य बनाने की शिक्षा दी थी। गुरुदत्त विद्यार्थी जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता था, स्वामी जी के मृत्यु दृष्य को देखकर आस्तिक बन गया था।

महर्षि के शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय, गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द, गणपति शर्मा, चमूपति एम.ए., स्वामी समपर्णानन्द आदि ने जीवनभर वेदों का प्रचार–प्रसार करके पाखण्ड के दुर्गो को धराशायी किया। रामचन्द्र देहलवी, पं. शास्त्री प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी ने सैंकडों शास्त्रार्थ करके पंडे, पुजारियों, मुल्ला मौलवियो, पोप पादरियों को शास्त्रार्थ में हराया। वे परम ईश्वर भवन, धर्मात्मा व स्वाध्यायशील थे। हमें उनका अनुशरण करना चाहिए था किन्तु हम वेद मार्ग से भटक गए। उसका परिणाम आज सबके सामने है।इस समय वेद विरोधी मन–मतान बढ़ते जा रहे हैं। हजारों पोंगा–पंथी अपने आपको भगवान का पैरोकार बताकर भोली–भाली जनता को अंधेरे के गर्त में धकेल रहे हैं। सच्चाई तो यह हैः–

"ईसाई भोली जनता को, बना रहे है ईसाई।
अमेरिका, इग्लैंड मदद करते हैं इनकी दुखदाई।।
मुसलमान बढ़ गए जगत में, भारी शोर मचाते हैं।
खाते पीते हैं भारत का, गीत अरब के गाते है।।
नेता है खुदगर्ज़–शराबी, धर्म कर्म का ध्यान नहीं।
कुर्सी के हैं दास कुकर्मी, भले–बुरे का ज्ञान नहीं।।
अगर रहा यह हाल साथियों; सकल जगत मिट जाएगा।
यह सारा संसार हमें, लोभी, कायर बतालायेगा।।"

आर्यो! सारे संसर के विद्वान वेदों को सबसे प्राचीनतम धर्म ग्रन्थ मानते हैं। मेक्समूलर, रोमा रोला आदि पाश्चात्य जगत के विद्व ानों ने भी वेदों की महत्ता को समझा था और महर्षि दयानन्द को अपना गुरु माना था। मुसलमानों के नेता सर सैयद अहमद खाँ भी स्वामी दयानन्द की विद्वता, त्याग, तपस्या, कर्मठता के आगे नतमस्तक थे।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

यह द्वीप अकेला

● डॉ. धर्मवीर सेठी

अपने कॉलेज के प्राचार्य–कक्ष में बैठा मैं उत्सुकतावश तथा ज्ञान–वर्धन के लिए दीवारों पर लगे हुए विभिन्न छाया–चित्रों का विहंगावलोकन कर रहा था। इन्हें भित्ति–चित्र स्यात् इसलिए नहीं कह सकते क्योंकि ये चित्रकला के नमूने के रूप में उन भितियों पर खचित न थे। फिर भी इनका अपना आकर्षण था। अपनी ओजस्विता और अपना लावण्य। इनमें महात्मा गाँधी के रूप में यदि 'राष्ट्र नेता' का चित्र था, तो देव–दयानंद, लाला लाजपत राय सरीखे आर्य एवं क्रान्तिकारी व्यक्ति भी थे। पूछने पर पता चला कि कुछ अन्य चित्र डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के भूतपूर्व प्रधान के हैं तो एक अन्य दीवार पर एक लम्बी पंक्ति 'तिथि–बद्ध' उन महापुरुषों की थी जिन्होंने इस कॉलेज की बागडोर अपनी–अपनी योग्यतानुसार निश्चित् समय के लिए सम्भाली थी। आश्चर्य की बात है कि जिस प्रकार का छाया–चित्र महात्मा हंसराज का लगा हुआ है, जिस पोज में वह व्यक्ति आसीन है वही इस तथ्य का परिचायक है कि उस में 'नेटवर्क' शक्ति कितनी प्रबल थी।

जिज्ञासा बढ़ती है। वह सौम्य पर रोबीला रूप–सर पर पहनी पगड़ी स्वाभिमान व इज्जत का परिचायक थी, तो चक्षुओं पर रखा चश्मा उस व्यक्ति की पैनी दृष्टि का सूचक था, श्वेत दाढ़ी कह रही थी मानो धूप में बाल सफेद नहीं किए तो शरीर को ढकने वाली अचकन उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के गौरव का प्रतीक थी। चित्र कदाचित युवावस्था का न रहा होगा परन्तु वृद्धावस्था भी जिस व्यक्ति की इतनी गरिमामयी हो सकती है उसका यौवन कैसा रहा होगा, स्वतः अनुमान लगाने योग्य है। नीचे अंकित अक्षरों ने जैसे उन्हें समय की सीमाओं मे बाँध दिया गया था।

महात्मा हंसराज 1886 से 1912

यह व्यक्ति 'महात्मा' क्यों कहलाया, इनमें कौन से गुण थे, इनकी निजी विशेषता क्या थी, उन्होंने नेतृत्व कला कैसे और किससे सीखी, इनका प्रेरण स्रोत कौन था आदि कुछ ऐसे प्रश्न थे जिनसे अन्तस् स्वतः आलोड़ित हो उठा। एक आवाज़ आई। नमन तो बाद में भी हो सकता है, पहले इन जैसा बनने का प्रयास तो करो। यह अकेला दीपक अनेकों दीप कैसे जला पाया, इसे स्वयं को रोशनी कहाँ से मिली?

पुस्तक की आवश्यकता महसूस हुई। परंतु क्यों! इस महापुरुष का जीवन तो स्वयं की एक खुली किताब है, उसे ही क्यों न बाँचा जाए। जैसे ही यह प्रयास आरंभ हुआ, पता चला कि यह तो 'गुदड़ी का लाल' था।

भूसे की शैया पर जन्म लेने वाला, अतीव निर्धनता और निराशा की आंधियों के थपेड़े खाता हुआ, चना–चबेना से अपनी भूख मिटाता हुआ। परंतु 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' प्रेरणा सूत्र से जैसे ही यह युवक प्रेरित हुआ मानों समस्त नैराश्य की कालिमा का स्थान आशान्वित आलोक ने ले लिया हो। सम्भवतः हंसराज ने यह अनुभव किया होगा कि मनुष्य को आगे बढ़ाने वाली शक्ति है उसका मनोबल, उसका आत्मविश्वास और वह प्राप्त होता है अपने निर्माता का ज्ञान प्राप्त करने से–ईश्वरीय आस्था से, उसके स्मरण से, उसकी गोद में चन्द घड़ी बैठने से, सम ध्यान से, संध्या से। महात्मा जी ने इसी कारण संध्या पर विशेष बल दिया है।

महात्मा जी का प्रिय भजन था–

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ सो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।

इस गीत को वह प्रातः ब्राह्म–मुहूर्त में उठकर चारपाई पर बैठे हुए ही गाते थे। ईश्वर में, जगत्–नियन्ता में उनकी समस्त आधि–व्याधियों का निदान थी। आइए, हम सब अपने आप से यह प्रश्न करें कि क्या हमें उस दिव्य–सत्ता में विश्वास है और यदि हाँ, तो कितना? ध्यान रहे, उस जगत पिता में विश्वास रखने से ही आत्म विश्वास, मनोबल और मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है। मानव जीवन के उत्थान के लिए यह 'रीढ़ की हड्डी' है। यदि यह सीधी नहीं रही हो अनायास कवि को पूछना ही पड़ेगा–

मुहम्मद! बिरधि जो नई चले,
काह चले भुई टोई।
जोबन रतन हेरान है,
मकु धरती मँह होई।।

हंसराज जी ने 'यौवन' का महत्व समझा था तभी तो उन्होंने सहर्ष अपनी सेवाओं को ऋषि दयानंद के स्मारक 'दयानन्द ऐंग्लोवैदिक स्कूल एवं कॉलेज' के लिए बिना किसी पूर्वाग्रह और शर्तों के समर्पित कर दिया था। भाई मुलखराज द्वारा दी गई अपनी राशि के आधे भाग अर्थात् 40/– में ही उनकी जीवन निर्वाह हो रहा था। हंसराज जी धन की शुचिता, उसके सदुपयोग का महत्व जानते थे। शास्त्र–वचन का उन्हें ध्यान था।

यो अर्थ शुचिः सः शुचि
न मृद् वारि शुचिः शुचिः

अर्थात् धन की पवित्रता की वास्तविकता पवित्रता है, मिट्टी और पानी से की गई पवित्रता पावनता नहीं। कदाचित् इसलिए एक लम्बी अवधि (26 वर्ष) तक जो वह प्रिंसिपल रहे, उनकी ओर किसी ने पैसे के मामले में उंगली नही उठाई। परन्तु आजकल के प्रिंसिपल (ो) की स्थिति किसी है, भित्ति पर लगे अन्य कुछ चित्र बोलते हैं।

यह तो था उनका निष्काम भाव, जिसकी पहचान उन्हें गीता से हुई परन्तु अपनी अपनी विचारधारा में वह महात्मा कट्टर आर्य समाजी थे। दयानंद के भक्त! नहीं! उनके संदेश के प्रचारक, उनके अधूरे काम को पूरा करने का

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

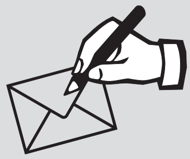

पत्र/कविता

"दायित्व बोध जागृत रखें"

अच्छे और बुरे दोनों विधि के विचार घढ़ने की।
हर मनुष्य में क्षमता है, हर स्थिति से लड़ने की।।
सही और गलत का अन्तर भी वे खूब समझते।
पर, जब रूचि हावी होती वे गलत राह चल पड़ते।।
पछितावा भी होता, फिर भी गलती करते जाते।
जान बूझ के, वे अपना दायित्व बोध विसराते।।
ऐसा होता, जब अन्दर की मनास्थिति पे न नियंत्रण।
रहता, तो बाहर की परिस्थितियों में बह जाते हैं जन।।
जो भीतर की मनोस्थितियों मे भी काबू पा जाते।
तन, मन और बुद्धि तीनों पर अलग-अलग स्थिति में।।
हमें नियंत्रण करना आना चाहिये हर स्थिति में।
वेगवान चंचल मन इन्द्रिन पे सवार रहता है।।
भोग चाहती इन्द्रिन को जब मन का संग मिलता है।
तो उनकी भोगेच्छा की गति और तीव्र हो जाती।।
तीव्र गति के पीछे बुद्धि भी बहने लग जाती।
वह, अपना दायित्व बोध विसराती, रोक न पाती।।
गलत परिस्थिति-रूचि जिससे हम पे हावी हो जाती।
मनस् वेग का मार्ग बदल, ऐन्द्रिक बहाव को रोकें।।
और बुद्धि को जागृत रख अन्तरस्थ स्थिति संजोके।
जो अपने भीतर की स्थिति को संभाल लेते हैं।।
बाह्य परिस्थितियाँ वे मन अनुकूल बदल लेते हैं।
गांधी की विचार आंधी ने ब्रिटिश तख्त पलटाया।।
दयानन्द ने पाखण्डों का गढ़ इस भांति दहाया।।

दया शंकर गोयल
1554.डी. सुदामा नगर इन्दौर (म.प्र.)

ईश शक्ति, जीव शक्ति और सृष्टि शक्ति

हमारे शास्त्र जिस शक्ति की पूजा से विजय प्राप्ति की चर्चा करते हैं उसे ठीक रूप में जानना मनुष्य जीवन को दुःखों से बचाकर सफलता तथा शान्ति दिला सकता है। वेद, शास्त्र, उपनिषद में उस आध्यात्मि शक्ति को ओम् कहा गया है। यह निराकार, चेतन, सर्वव्यापक-ज्ञान और आनन्द युक्त है। यह सदा हमारे अङ्ग्सङ्ग् भीतर व बाहर विद्यमान रहती है। प्रकृति द्वारा आत्माओं के कर्मानुसार विचित्र सृष्टि रचना, कर्मफल प्रदान करना एवं वेदमार्ग पर चलते सब प्राणियों से यथा योग्य प्रेम व्यवहार करते, निष्काम सेवा करते हुए उसका ध्यान करने वालों को समाधि का आनन्द, मुक्ति तथा विभिन्न योनियों में जन्म देना इसी देवों द्वारा पूज्य ब्रह्म शक्ति का मुख्य कार्य है। यही ईश्वरी शक्ति, प्रकृति से सृष्टि का निर्माण करती उसमें विभिन्न प्रकार की अनेक जड़ शक्तियाँ उत्पन्न करती है, जैसे सौर शक्ति, आकाशीय विद्युत शक्ति, भूमि की आकर्षण शक्ति, विद्युत शक्ति तथा चुम्बकीय आदि शक्ति। प्रकृति से सृष्टि में परिवर्तन काल में आने वाली यह शक्तियां जड़ हैं।

चेतन शक्तियाँ दो हैं एक ब्रह्मशक्ति जो सर्वव्यापक है एवं दूसरी आत्मस्य जीव-जातीय शक्ति। सर्वज्ञ ईश्वरीय शक्ति एक ही है एक होने से/ब्रह्मा (देवता) शिव, श्रीराम व श्रीकृष्ण द्वारा ओम् रूप में पूज्य होने से सर्वत्र पूज्य है। एक-देशीय अपने-अपने शरीरों को चलाने वाली होने से आत्म शक्तियां अनेक हैं। जहां ईश्वरीय शक्ति असीमित है सर्वव्यापक होने से वहां आत्मशक्तियां सीमित हैं, एक देशीय होने से। ये दोनों चेतन हैं और प्रायः हर ब्रह्माण्डीय ग्रह में हैं। ईश्वरीय-शक्ति अत्यन्त न्यायकारी रूप से यथा योग्य सब का कल्याण करती है कदापि बिना कर्म के दुःख, समाधि या आनन्द नहीं देती, परन्तु जीव-शक्ति अल्पज्ञ होने से बिना कर्म के भी दूसरों के दुःख का कारण बन जाती है। आज संसार में अधिकतर दुःखों का कारण यही मानवीय शक्तियां हैं। प्रकृति द्वारा समय-समय पर होने वाले अनेक दुःखों का कारण भी इन्हीं शक्तियों की प्रकृति से छेड-छाड़ व जीने के बदले यज्ञ न करने से होने वाला प्रदूषण है। अधिक जानने हेतु सत्या प्रकाश पढ़ें।

इन उपरोक्त दो चेतन तथा एक प्राकृतिक जड़ शक्तियों को छोड़कर एवं मनुष्य द्वारा विद्युत, चुम्बक, तेल, बैट्री और ऊर्जा, वाष्प, एटॉमिक एनर्जी, जलधारा निर्मित कला यन्त्रों से पृथक किसी मानव निर्मित मूर्ति में कोई शक्ति नहीं। आज से पूर्व आज के पश्चात भी कोई जड़ मूर्ति प्रकार न कोई शक्ति रखती थी न रखेगी। आज से पूर्व आज के देवी देवताओं का नाम लेकर शक्तियों द्वारा लाभ पहुंचाने की बात कर रहा है, वह सब उसका षडयन्त्र तथा लोगों का अज्ञान है। जब शिव जी जीवित थे तो उन्हें दानवों से लड़ने हेतु, श्रीराम को रावण से लड़ने हेतु, श्रीकृष्ण को कंस आदि से लड़ने हेतु स्वयं युद्ध करना पड़ा। किसी शक्ति ने काम नहीं किया। हनुमानजी को स्वयं समुद्र पार व संजीवनी हेतु हिमालय पर जाना पड़ा। अपने आप न तो सीता का पता चला नहीं शक्ति से स्वयं ही वही बैठे-बैठे संजीवनी ही आई। यदि निर्मल बाबा अपने आपको उन देवताओं से भी महान समझता है तो क्यों दिन-प्रतिदिन वृद्ध हो रहा है, बाल सफेद हो रहे हैं। क्यों नहीं, स्वयं पर शक्तिपात करता। दुर्गा की शक्ति तो भैरों के डर से गुफा में छिप जाना नहीं, अपितु वहीं उसे अर्ध कुंवारी पर भस्म कर देना होता। यदि निर्मल बाबा के पास कोई शक्ति कार्य-सिद्धि वा धन प्राप्ति की है तो वह क्यों दरबार में भाग लेने हेतु दो-दो हजार रुपये ले रहा है? क्यों नहीं लेने के स्थान पर सीमावर्ती गरीबों, ग्रामीणों और आदिवासियों पर धन की वर्षा कर देगा? सच्चाई यह है कि लोगों के कार्य तो होते हैं उनके पुरुषार्थ व यथासमय फल से परन्तु अज्ञानवशात वे नाम ले देते हैं निर्मल बाबा का।

यदि बाबा में कोई शक्ति है तो वह लोगों को भ्रमित करने के स्थान पर उसे देश पाक, चीन, बंगला देशी सीमाओं की सुरक्षा कश्मीर में चल रहे देशद्रोही आतंकवाद, भ्रष्टाचारी नेताओं, काले धन चोरों और बलात्कारियों के दामन में लगाये, यदि कोई शक्ति है तो राम-कृष्ण की प्रतिदिन कटती गौरक्षा में लगाए। जनता विश्वास में लेकर झूठ बोलकर ठगना बहुत बड़ा पाप है, ऐसा न हो कि वह भी कौमी में जाकर भभूती निकालने वाले की तरह मरे।

आश्चर्यः- जनता की मूर्खता पर है जो बाबा अपने कपड़े, भट्ठे आदि के व्यापार को लाभ से न चला सका। वह जनता की बिगड़ी कैसे बना सकता है?

ध्यान दें यदि ब्रह्मा, दुर्गा काली, शिव, राम, कृष्ण, गणेश, हनुमान की मूर्तियों में शक्ति होती तो, न मन्दिरों में चोरी होती, न वे मुगलों द्वारा तोडे जाते।

-उद्गीथ, हिमाचल प्रदेश

****

ओ.एस.,डी.ए.वी. कैंथल की तिशारा गर्ग ने लगातार दूसरी बार मारी बाजी

ओ.एस.,डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैथल की बारहवीं कक्षा की छात्रा तिशारा गर्ग ने लगातार दूसरी बार भास्कर जीनियस छात्रवृत्ति' जीत कर विद्यालय व माता–पिता को गौरवान्वित किया है। तिशारा गर्ग ने पिछले वर्ष भी इस प्रतियोगिता को जीता था और 1,01,000 रूपये की राशि पुरस्कार स्वरूप प्राप्त की थी। इस वर्ष भी भास्कर समूह द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें भारतवर्ष के मध्यप्रदेश, छतीसगढ़, गुजरात राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र तथा झारखण्ड से लगभग एक लाख छात्रों ने भाग लिया। तिशारा गर्ग ने सभी छात्रों को पछाड़ते हुए ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का परिचय दिया। भास्कर समूह द्वारा तिशारा गर्ग को एक लाख रूपये की राशि पुरस्कार स्वरुप देने की घोषणा की गई है।

विद्यालय की प्रधानाचार्या व क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती सुमन निझावन ने इस उपलब्धि के लिए तिशारा गर्ग व उसके माता–पिता को हार्दिक बधाई दी और छात्रा के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बिलगा (जालंधर) में रक्तदान शिविर

शीला रानी तागंड़ी डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बिलगा (जालंधर) में भारत विकास परिषद बिलगा शाखा के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्घाटन भारत विकास परिषद के प्रांत सचिव श्री यश महाजन ने अपने करकमलों से किया। शिविर में सबसे पहले स्कूल के प्रिंसिपल श्री रवि शर्मा ने रक्तदान किया और इस अवसर पर कहा कि रक्तदान से हम दूसरों का बहुमूल्य जीवन बचा सकते हैं। इस पुण्य कार्य के लिए युवाओं को आगे आना होगा। उसके बाद स्कूल के अन्य अध्यापकों ने भी रक्त दान किया।

पंजाब इंस्टीट्यूट ऑफ मैडिकल साइंसिज के डा. लांबा व उनकी टीम ने शिविर आयोजित किया। गाँव और क्षेत्र के अन्य लोगों ने भी इस शिविर में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और रक्तदान किया। इस अवसर पर स्कूल के चेयरमैन श्री यज्ञदेव तांगड़ी, स्थानीय प्रबंधक समिति के सदस्य व क्षेत्र के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

☞ पृष्ठ 9 का शेष

दीपावली, महर्षि दयानन्द...

आज विचार करने की जरूरत है कि महर्षि दयानन्द जी के उपकारों को हम क्यों भूल गए? महर्षि ने हमारे कल्याण के लिए ईटें खाईं, पत्थर खाए और सत्रह बार विषपान किया था। वे कभी भी प्रलोभन में न आए तथा कभी भी किसी अत्याचारी से भयभीत नहीं हुए थे। वे अकेले थे और हम करोडों भी आज कोई खास काम नहीं कर पा रहे हैं। अगर अपना भला चाहते हो तो मिलकर चलो और अंगडाई लेकर खड़े हो जाओ।

उठो आर्यो! कदम बढ़ाओ, वेदों का प्रचार करो।
"दुनिया से अन्याय मिटाओ, अविद्या रूपी तिमित हरो।।
आर्य कुमारो! बिना तुम्हारे, जग को कौन जगायेगा।
महानाश की ज्वालाओं से, जग को कौन बचायेगा।।
वीर लाजपत, गुरुदत्त अरु हंसराज वन जाओ तुम।
लेखराम श्रद्धानन्द बनकर, जग में धूम मचाओ तुम।।
दीवाली का महत्व यही है, समझो, जग को समझाओ।
ओ३म का झण्डा लो हाथों में, अमर जगत में हो जाओ।।"

–आर्य सदन, बहीन,
जनपद–पलवल (हरियाणा)

☞ पृष्ठ 9 का शेष

यह द्वीप.....

बीड़ा उठाने वाले। बक्षीटेक चन्द जी के शब्दों में ''स्वामी दयानंद के बाद जितने भी सेवक हुए, उन सब से सबसे लम्बी सेवा महात्मा हंसराज की है। वह परमात्मा पर अटल विश्वास रखते थे। उन्हें आर्यसमाज के नियमों और सिद्धातों पर पूर्ण विश्वास था। वह कोई बात नियम या सिद्धांत विरुद्ध नही करना चाहते थे। वह निरंतर निष्काम सेवा करते रहे। ऐसे 'निष्काम–ऋषि' का हमसे विछ्ण जाना आर्य समाज की भारी क्षति है।'' मैं तो कहता हूँ वह सच्चे अर्थो में पंजाबी थे मात्र बिजवाड़ा (होशियारपुर–पंजाब) गाँव में जन्म लेने के कारण नहीं अपितु अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरन्तर कटिबद्ध रहे। पंजाबी की यह विशेषता होती है कि उसे कही भी भेज दीजिए जिस किसी अवस्था में भी हो वह अपना जीवन निर्वाह करने को तैयार रहता है। वह पराश्रयी नहीं बनता । महात्मा हंसराज ने अपनी अंतिम घड़ी में भी इसी चिंता को व्यक्त करते हुए महात्मा आनंद स्वामी को अपने पास बिठा उन्हें काम सौंपते हुए यही कहा था–

(1) वेद प्रचार का ध्यान रखना
(2) कॉलेज के प्रबन्धन में आर्य समाजी व्यक्ति कम हो रहें हैं। हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए।
(3) समाज का ढाँचा न बिखरे।
(4) मेरा संस्कार 'संस्कार विधि' के अनुसार ही हो, कोई फालतू या आर्य समाज के विरूद्ध बात न हो।

यह था महात्मा हंसराज का आर्यत्व, आर्य समाज में निष्ठा, जिस के आधारभूत ग्रंथ हैं चतुर्वेद। उन्हें वेद के 'संगठन सूक्त' में राष्ट्र की एकता झलकती दिखाई पड़ी थी तभी उन्हें समाज की चिंता थी और जन्म से मृत्युपर्यन्त विभिन्न संस्कारों का ज्ञान प्रचारित करने वाली महर्षि स्वामी दयानंद कृत 'संस्कार विधि' में उनका विश्वास था।

हंसराज वस्तुतः हंस थे – नीर– क्षीर विवेकी। जिसने अपराध किया है वह दण्ड का भोगी अवश्य है चाहे वह अपना सगा पुत्र ही क्यों न हो। दिल्ली षड्यंत्र केस में कैद किये गये घोर यन्त्रणा सहते हुए और आजीवन कारावास का दण्ड भुगतने वाले अपने बेटे बलराज की रिहाई के बारे में उन्होंने सिफारिश नहीं की। वाह रे महात्मन्। एक तुम थे और आज के 'महा–तमा' हैं जो सब कुछ आत्मसात करने के लिये सतत् प्रयत्नशील हैं। समाज ढाँचा कैसे न बिखरे? हंसराज महात्मा बने – आत्म–विश्वास, ईश्वर–निष्ठा, आस्तिकता, कर्तव्य परायण्ता, निष्काम भाव और जीवन और लक्ष्यहीन न बनाने से। हमारा मस्तक स्वतः उस पूजनीय के श्री चरणों में झुक जाता है।

हाँ ध्यान आया उन चित्रों में महात्मा जी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले थे–लाला सांई दास, पं. मेहरचंद, डॉ.जी.एल. दत्ता जी का 6 वर्ष तक सानिघ्य प्राप्त करने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ उनके चरणों में बैठकर उनकी डायरी पढ़ने और सुनने का, उन्हें पास से देखने–परखने का। जितनी सादगी थी उनमें, जितनी दया थी, जितनी आत्मीयता–उससे उनके प्रेरक महात्मा हंसराज की के गुणों का भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है। डॉ. दत्ता जी के बारे में स्वंय महात्मा जी ने कहा था–

''मुझे यह भी प्रसन्नता है कि कॉलेज का काम अब अच्छा चल रहा है। मेहर चन्द जी और गोवर्धन लाल दत्त जी अच्छा काम करने वाले हैं''।

ध्यान रहे प्राचार्यों की ऐसी परम्परा की अब भी आवश्यकता है।

चित्रों की उस पंकित में जब मै महात्मा हंसराज को नायक के रूप में देखता हूँ–प्रथमतः एकाकी पर बाद में प्रेरक तो कविवर 'अज्ञेय' की इन पंक्तियों को स्वतः गनगुनाने लगता हूँ–

यह दीप अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पंकित को दे दो।

'वरेण्यम्',ए – 1055,
सुशान्त लोक–1
गुरुग्राम–122009

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 7-8/11/2012
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

अमृतसर में बी. बी. के डी.ए.वी द्वारा हवन यज्ञ का आयोजन

अमृतसर में बी.बी.के डी.ए.वी. कॉलेज की आर्य युवती परिषद् द्वारा आर्य समाज लोहगढ़ में एक भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री जे.पी. शूर (डायरैक्टर, डी.ए.वी पब्लिक एंड एडिड स्कूल्ज़) मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित थे। कॉलेज प्राचार्या डॉ (श्रीमती) नीलम कामरा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया, उन्होंने उपस्थिति को बताया कि कॉलेज की आर्य युवती परिषद् द्वारा प्रत्येक अवसर पर छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य एवं मगंल कामना के लिए यज्ञ किए जाते हैं। यज्ञ समारोह में उपस्थित कॉलेज एवं होस्टल की छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए आशीर्वचन दिए। उन्होंने आर्य युवती सभा के सदस्यों एवं अन्य उपस्थित सदस्यों एवं को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई दी। मुख्य अतिथि श्री जे.पी. शूर जी ने आर्य समाज के उत्थान और विकास की ओर कॉलेज के सतत प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए प्रोत्साहित किया एवं इस मार्ग पर चलने के लिए सबको प्रेरित किया। डॉ. लखनपाल जी ने अपने द्वारा लिखित पुस्तक ''हवन'' में यज्ञ की वैज्ञानिकता पर डाले गए प्रकाश की चर्चा की। श्री सुदर्शन कपूर (चेयरमैन लोकल मैनेजिंग कमैटी) ने उपस्थिति का धन्यवाद किया एवं प्रिंसीपल एस.के लूथरा ने मंच संचालन किया।

कॉलेज के संगीत विभाग की छात्राओं के द्वारा ''गाए जा तू ओ३म् की महिमा गाए जा............'' भजन की प्रस्तुति की गई जिस से सम्पूर्ण वातावरण अध्यात्ममय हो गया। इस अवसर पर डी.ए.वी रैड क्रॉस की छात्राओं को उपहार भी प्रदान किए गए।

डी.ए.वी. टूटू, शिमला में हुए पर्यावरण सुरक्षा के प्रयास

विद्यालय के 32 छात्रों ने वन विभाग क्षेत्र में वनमहोत्सव के उपलक्ष्य में 50 पौधे रोपित किए। विद्यालय इस विभाग से गत 6 वर्षों से जुड़ा हैं और बच्चों द्वारा हर वर्ष वृक्षारोपण किया जाता है। लगाए गए पौधों की देखरेख पानी देकर उन पौधों की सुरक्षा भी करते हैं। विद्यालय में बच्चों को प्रकृति के प्रति सजग बनाने के लिए एक (नेचर कोरनर) भी है जिसमें सभी बच्चों ने अपने घरों से एक–एक पौधा लाकर लगाया गया है, हर बच्चा अपने जन्मदिन पर एक पौधा रोपित करता है।

पौधारोपण के साथ–साथ पर्यावरण की सुरक्षा हेतु एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने नारा लेखन, भाषण, चित्रकला के माध्यम से अपने पर्यावरण को बचाने का संकल्प लिया।

कूड़ा कचरे के उचित प्रबंधन हेतु भी इस कार्यशाला मैं सुझाव दिये गए तथा हर कक्षा में कूड़ा पात्र रखकर कूड़ा इधर–उधर न बिखरने पर भी चर्चा की गई। छात्रों को जल सरंक्षण तथा वर्षा जल संग्रहण की भी जानकारी दी गई। जिसमें 'जल ही जीवन है' पर छात्रों के सामने विचार प्रस्तुत किये गए।

वातावरण में प्रदूषण की समस्या को रोकने के लिए विद्यालय में पोलीथीन पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया है।

डी.ए.वी. मलेरकोटला में चौथा विशाल रक्तदान शिविर आयोजित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मलेरकोटला में सरकारी राजेन्द्रा कॉलेज एवं हास्पिटल पटियाला के विशेषज्ञ डाक्टरों की टीम द्वारा चौथा विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर का उद्घाटन श्री कृष्ण मोहन गुप्ता मेम्बर एल.एम. सी., डी.ए.वी. एवं डायरेक्टर विशाल पेपर मिल्ज़ लिमिटेड मलेरकोटला तथा श्री मदन मोहन अंगरीश सरप्रस्त श्री सनातन धर्म सभा (रजि.) मलेरकोटला के कर–कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री विजय रिखी, प्रधान ब्राह्मण सभा एवं सदस्य एल.एम. सी. डी.ए.वी. स्कूल मलेरकोटला; श्री जीत गोगिया, पूर्व प्रधान भारत विकास परिषद; श्री विजय किंगर सदस्य पूर्वज्योति नेत्र सभा; श्री नवरोतमसिंहरावतमुख्यप्रबन्धक, श्रीविष्णु गुप्ता सहायक प्रबन्धक तथा सुनील कुमार ओरियन्टल बैंक, डा. राकेश कुमार अरोड़ा इत्यादि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। यह रक्त दान शिविर श्री टी. सी. सोनी प्रिंसिपल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मलेरकोटला की मेहनत के फलस्वरूप वर्ष 2009 से लगातार प्रतिवर्ष आयोजित किया जा रहा है। वर्ष 2011 में इस शिविर में 175 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया था। इस वर्ष भी इस रक्तदान शिविर में लगभग 200 रक्त दाताओं ने नाम पंजीकृत करवाया परन्तु ब्लड बैंक में केवल 100 यूनिट ब्लड संभाल कर रखने की ही व्यवस्था थी।

अतः इस रक्तदान शिविर में 101 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। प्रिंसिपल श्री टी.सी.सोनी ने सभी रक्त दाताओं का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

मुद्रक व प्रकाशक – श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी